श्रीभक्तिशिरोमणि

जिसमें

सम्पूर्ण रामायणकी कथा बहुत रोचक
छन्दों में वर्णित है ॥

जिसको

[illegible] निवासि परमभक्त महात्मा वैष्णव
दासजी के शिष्य व बारहबंकी प्रदेशान्तर्गत न-
रौली ग्रामनिवासि नम्बरदार अयोध्यासिंह
वर्मा के पुत्र भगवन्तसिंहने बनाया ॥

प्रथम बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
सन् १८९१ ई०

इस मतबे में जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें [illegible]
हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

नवीनसंग्रह १)॥

जिसमें भक्तभयहारी कुंजबिहारी रसिकशिरोमणि श्रीकृष्ण और श्रीमतिराधाजी के लीलाविषयक नानाप्रकारके अत्युत्तम [illegible] और सर्वोपरि वर्णित हैं जिसको हफ़ीज़ुल्लाहखां [illegible] [illegible] मदरिस मदर्सा मौज़ा [illegible]पुर परगने बंगर थाना [illegible] [illegible] ज़िला हरदोई ने अपने शौक़ीन दोस्तों के लिये निमित्त अति परिश्रमसे संग्रह किया ॥

षट्ऋतुकाव्यसंग्रह १॥

हफ़ीज़ुल्लाहखां संग्रहीत जिसमें बसन्त [illegible] हेमन्त, शिशिर इन छओं ऋतुओं के कवित्त व [illegible] [illegible] [illegible] बड़े रसीले अपने [illegible] तबीयतवाले महाशयों के चित्त विनोदार्थ बड़े परिश्रम से [illegible] लिखे गये हैं ॥

प्रेमतरङ्गिणी ~)॥

मुन्शी हफ़ीज़ुल्लाहखां संग्रहीत इसमें भिन्न भिन्न [illegible] [illegible] व प्रत्येक ऋतुओं के कवित्त सवैया हरएक कवि के [illegible] हुये संग्रह किये गये हैं इसकी उत्तमता [illegible] ही [illegible] होती है ॥

हफ़ीज़ुल्लाहखां का हज़ारा ॥।~)॥

इसमें नानाप्रकार के बहुतही उत्तम २ सब १०८९ कवित्त [illegible] हैं स्थान २ पर तसवीरें भी बनी हैं ऐसा ग्रन्थ कवित्त संग्रह कियाहुआ आजतक देखने में नहीं आया उत्तमता [illegible] में प्रकट होगी रसिक पुरुषों के लिये अत्यन्त आनन्दकारी है

भक्तिशिरोमणि का सूचीपत्र ॥

बालकाण्ड ।

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	गणेशादि सर्व्वदेव व गुरु आदि वन्दन पश्चात् संक्षेप से सर्व्व रामायण वर्णन	१	१२
१	सुरों की स्तुति से नभबाणी व मनुसपत्नीक बर प्राप्त पश्चात् रामादि चारों भ्रातों का जन्मोत्सव वर्णन	१२	१७
२	श्रीरामचन्द्र जीकी बाललीला वर्णन	१८	२६
३	श्रीरामचन्द्र जी की बालक्रीड़ा व विद्याध्ययन वर्णन ...	२६	३६
४	श्रीरामचन्द्र जीकी कैशोरलीला वर्णन	३६	४६
५	श्रीजानकी जीका जन्मोत्सव वर्णन	४६	५५
६	श्री विश्वामित्रजी का अवधआगमन व रामलषण यात्रा ताड़का सुबाह्वादि बध अहल्या उद्धार जनकपुर आगमन श्री जनक विश्वामित्र समागम वर्णन	५५	६६
७	श्री रामचन्द्रजी का पुष्पबाटिकावलोकन वर्णन ..	६६	७७
८	श्री रामचन्द्र रङ्गभूमि आगमन वर्णन ..	७७	८५
९	श्री रामचन्द्र धनुभङ्गकरण सीता जयमाल मेलन वर्णन	८५	९४
१०	श्री रामचन्द्र परशुराम सम्वादे विविध विलास वर्णन	९४	१०४
११	श्री जनकदूत अयोध्या आगमन श्रीदशरथ महाराज प्रति दूत बार्त्ता श्री रामचन्द्र व्याह हेत नृप बरात सजि गमन वर्णन	१०४	११६
१२	श्रीराम जानकी व भरतादि ब्याह वर्णन ..	११६	१३२
१३	श्री रामचन्द्र कलेवाकरण वर्णन ..	१३२	१४७
१४	श्री रामचन्द्र बरात अयोध्या प्राप्त वर्णन ..	१४७	१५८
१५	श्री रामचन्द्रादि सुख शयन वर्णन ..	१५८	१६३

इति बालकाण्ड समाप्त ॥

अयोध्या काण्ड ।

१	भरत शत्रुघ्न नन्योरेगमन नारद आगमन विधि संदेश श्री रामचन्द्र प्रति कथन वर्णन	१६४	१६६

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
२	श्री रामचन्द्र राजतिलक हेतु पुर मंगल सजन कैकेई प्रति मन्थरा छल कथन वर्णन	१६६	१७६
३	कोपभवन कैकेयि बरदान दशरथ करुणा वर्णन ..	१७६	१८६
४	श्री दशरथ महाराज विषाद जानकी रघुनन्दन कौशल्या प्रति बिदा मांगन, सुमित्रा लषण सम्बाद, सीता लक्ष्मण सहित प्रभु नृप पास आगमन वर्णन	१८६	१९७
५	श्री रामचन्द्र बनयात्रा शृंगबेरपुर आगमन सचिव सम्बाद वर्णन	१९८	२०५
६	श्री रामचन्द्र प्रति निषाद बार्त्ता, पंथ चरित्र, प्रभु सीता लषण सहित बाल्मीकि मुनि आश्रम प्राप्ति वर्णन ..	२०६	२१६
७	श्री रामचन्द्र चित्रकूट विलास वर्णन ..	२१६	२२३
८	सुमन्त अयोध्यागमन नृप तनुत्याग भरत चित्रकूट गमनवर्णन	२२३	२३६
९	श्री भरतजी को समाज सहित चित्रकूट निकट आगमनवर्णन	२३६	२४८
१०	श्री भरतजी को चित्रकूट आगमन श्री रामचन्द्र मिलाप वर्णन	२४८	२५७
११	चित्रकूट जनकदूत आगमन वर्णन	२५७	२६७
१२	श्री जनक सुनैना सम्बादे भरत गुण वर्णन ..	२६७	२७४
१३	श्री भरत पुरगमन हेतु प्रभु आज्ञा वर्णन ..	२७४	२८१
१४	श्री भरतजी को मुनि वेष नन्दिग्राम बास वर्णन ..	२८१	२८६

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

आरण्य काण्ड ॥

१	जयंतनेत्रभंग प्रभु अत्रिमुनि समागम, अनसूया पतिव्रतधर्म व०	२८७	२९२
२	विराधबध, शरभंग कथा, अगस्त्य समागम, प्रभु पंचवटी बास वर्णन	२९२	२९७
३	लक्ष्मणप्रति प्रभु ज्ञान, वैराग्य, भक्ति वर्णन	२९७	३०१
४	लक्ष्मण की शूर्पणखा के काननाक काटना और श्रीरामचन्द्र करके खरदूषण त्रिशिरादि बध वर्णन	३०१	३०५
५	श्रीराम करके मायामृग बध व रावण करके मायारूपी सीता हरण वर्णन	३०५	३११
६	जटायु उद्धरण तथा शवरी कथा वर्णन ...	३१२	३१६
७	पंपातट श्रीरामचन्द्र नारद समागम वर्णन ...	३१६	३१९

आरण्यकाण्ड समाप्त ॥

किष्किन्धा काण्ड॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	श्री रामचन्द्र सुग्रीव मित्रता, बालिबध वर्णन	३२०	३२६
२	सुग्रीव राजप्राप्ति व रामकरके वर्षा शरदऋतु लक्ष्मणप्रति ब०	३२६	३३०
३	सुग्रीव करके पठाई हुई बानर ऋक्षों की सेनाओं को चतुर्दिशि सीताको खोजना संपाति अंगदादि समागम तथा हनुमान् को समुद्र उल्लंघन विचार वर्णन	३३०	३३५

इति किष्किन्धाकाण्डसमाप्त॥

सुन्दर काण्ड॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	श्री जानकीजी समीप हनुमान् प्राप्त वर्णन	३३६	३३८
२	श्री हनुमान् जानकी संवाद वर्णन	३३६	३४५
३	श्री हनुमान्जी करके बाग उजारन निश्चर मारन लङ्का जारन वर्णन	३४५	३५३
४	श्रीरामचन्द्र को ससैन्य समुद्र तीर प्राप्त वर्णन	३५३	३५७
५	श्रीरामचन्द्र करके पीड़ित समुद्र को बिप्ररूपधर श्रीरामचन्द्रजी से सेतुबन्ध उपाय कथन	३५७	३६४

इति सुन्दरकाण्डसमाप्त॥

लङ्का काण्ड॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	श्रीरामचन्द्रजी को सेतुबन्धन व रामेश्वर स्थापन पश्चात् सुबेल शैलागमन वर्णन	३६५	३६६
२	अंगद व रावण का संवाद वर्णन	३६६	३८२
३	प्रथम युद्धमें कपिदल जयप्राप्त वर्णन	३८२	३८६
४	श्रीलक्ष्मणहित रामबिरह व हनुमान्जी को सजीवनी गृहीतागमन वर्णन	३८६	३९३
५	श्रीरामचन्द्रजी करके कुम्भकरण बध वर्णन ...	३९३	३९५
६	श्रीलक्ष्मणजी करके मेघनाद बध वर्णन	३९५	३९८
७	श्रीराम रावण के समर में जाम्बवान् को पदप्रहार रावण पर करना पश्चात् रावण मूर्च्छा वर्णन	३९८	४०६

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
८	रामकरके रावण बध वर्णन	४०६	४०६
६	विभीषण राज्य प्राप्त व पुष्पकारूढ़ रामको ससीता व ससैन्य भरद्वाज आश्रम आगमन और रामकरके पठाये हनुमान् का अवधागमन वर्णन	४०६	४१५

इतिलङ्काकाण्डसमाप्त॥

उत्तर काण्ड॥

१	श्रीरामचन्द्र को अयोध्यागमन भरतादि मिलाप व निज मंदिर गमन वर्णन	४१६	४१६
२	श्रीसीता रामचन्द्रराज्याभिषेक व सुरमुनि आदिस्तुति वर्णन	४२०	४२७
३	श्रीरामचन्द्र को वशिष्ठ प्रति कपिसमाज की प्रशंसा व सुग्रीवादि निज भवन गमन वर्णन	४२७	४३०
४	श्रीरामचन्द्र राज्योत्सव वर्णन	४३०	४३४
५	श्रीरामचन्द्रजी की सभामें द्विज, श्वान, गृद्ध, उलूक, काकको फिरियादी होके जाना और अपना २ पूर्वजन्म के वृत्तान्त को कहके शापोद्धार वर्णन	४३४	४३७

इतिउत्तरकाण्डसमाप्त॥



भक्तिशिरोमणि बालकाण्ड

सोरठा ॥

बिघ्न हरण गणराय बाहन मूषक बदन गज ।
चरण कमल शिर नाय बंदौं श्रीगिरिजा सुवन ॥
गणपति होहुसहाय देहु बुद्धि करि स्वच्छ मति ।
करहु कृपा अब आय जोरि पाणि अस्तुति करौं ॥

क० ॥ एक द्विज आनन द्विरद पंचआनन सुवन बिघ्न भानन बदत वेद गाथही । सिद्धि शिवसार गुण रूप के अगार मोद मंजुल उदार अब्धि पूर्ण ज्ञान पाथही ॥ दानि ऋद्धि सिद्धि बुद्धि बिस्तृत सुयश चारु बंदनीय लोक सब अग्र देव माथही । भाग्यवंत जोरि हाथ अवनि नवाय माथ करत प्रणाम बारंबार गण नाथही ॥ सो० ॥ बंदौं शारद माय मातु अनुग्रह कीजिये । बैठहु रसना आय जाते बल बाणी लहौं ॥ दो० ॥ बंदौं हर गिरिजा चरण बारबार शिर नाय । जासु कृपा बारिधि अगम बिनु प्रयास तरिजाय ॥ छप्पै ॥ भाल चंद्र शिर गंग अंग शुभ भस्म बिराजै । कुंद इंदु दर गौर मौर शिर ब्यालन राजै ॥ अम्बकाब्ज त्रयमंजु कंठ बिष परम सुहावै । रंजित छाल कुरंग माल मुंडन छवि छावै ॥

जय कृपासिंधु गुणधाम शिव करहु कृपा निज जानि जन । भग-
वंत चरण बंदनकरत जय जय जै गिरिजारमन ॥ कवित्त ॥ मोह
तम तरणि विशुद्ध वेदशास्त्रपार भूत प्रेतनाथ लोकनाथनके नाथ
वर । शील सिंधुनागर उदार दयावंत दानि दलन मनोज भाल
चन्द्रमा प्रकाशकर ॥ नामयश विस्तृत प्रभाव लोक लोकजाल
सेवत सरोज पायँ निर्जरालि नाग नर । भाग्यवंत जोरिपाणि बं-
दतनवायमाथ कीजिये कृपास्वदास जानि श्रीकृपालहर ॥ स-
वैया ॥ जय शोचविमोचन पंकजलोचन कोर चितै दुखदीनहरौ ।
न विरञ्चि लिख्यो सुखभाल जिन्हैं तिनको सुखदै सबकाजसरौ ॥
भगवंत महूँ सुनि औढर दानि बिनै करि पायँन माथ धरौ । यश
चाहत गान कियो प्रभुको गिरिजा शिव आय सहायकरौ ॥ रोला
छन्द ॥ नौमि राम घनश्याम कोटि मनसिज मद मोचन । नौमि
कृपा सुखधाम अमल पंकज दल लोचन ॥ नौमि धरण अवतार
मनुज महिभार विनाशं। नौमिहरण अघओघ जगत यश धर्म्म
प्रकाशं ॥ नौमि अगुण गुण धाम अलख अविगत अविनाशी ।
नौमि अनंत अलेख अनघ अविचल बलराशी ॥ नौमि बिरद हित
दीन शरण सुखप्रद परधामं । नौमि अनाथन नाथ विदित त्रिभु-
वन गुणग्रामं ॥ नौमि देवमहि धेनु साधु मुनि द्विज प्रतिपालं ।
नौमि अभेद अखेद बंदि कमलज शशिभालं ॥ नौमि धर्म्मधुर
धीर वीर बिबुधारि विभंजन । नौमि अजित अद्वैत ब्रह्म ब्यापक
जनरंजन ॥ नौमि काम क्रोधारि शमन संसृत जगदीशं । नौमि
भाव प्रिय शक्र सुखद सेवत अघखीशं ॥ नौमि सच्चिदानंद ज्ञान
घन शुद्ध शरीरं । नौमि नित्य ब्रह्मण्य अखिल अम्बोधि गँभीरं ॥
नौमि विश्व विख्यात सत्य संकल्प अपारं। नौमि सकल जगत्रात

सुजन त्रयताप निवारं ॥ नौमि अतुलबल सिंधु सुभग सुठि सहज उदारं। नौमि दीन उद्धरण शमन भवशोक विकारं॥ नौमि सिद्ध योगींद्र चरण सेवित सुख मूलं। नौमि अनल वर नाम दहन कलि पातक तूलं ॥ नौमि भानुकुल केतु सेतु संसृत नयनागर। नौमि नौमि नित नौमि राम रघुबंश उजागर ॥ कवित्त ॥ शील सम तोष शांति धीरता विराग ज्ञान तेज बल सागर समान देवशाल के। लोभ सिंधु कुंभज उदार दयावन्त वीर रंजन सुजन हार भार भूमि जालके ॥ नीति प्रीति पालक कृपाल वेद तत्त्वसार जीवन उद्धार काल दुष्टन करालके। भाग्यवंत भक्त कंज कानन प्रकाश भानु नौमि नौमि नौमिपद कौशला के लालके ॥ आदि शक्तिरूप भव्य शीतल सुशील चारु कीरति प्रकाश लोक पातक निकंदिनी। ध्यावत मुनीन्द्र योगि जागत कलाप ज्योति पावत न आदि अंत वेद शम्भु बंदिनी ॥ शारद सगौरि श्रीशरण पायँ सेव नित्य कारण जगत नाश पालन स्वछंदिनी। भाग्यवन्त दानिसुख दासन शमनि शोक नौमि नौमि नौमि पद मीथिलेश नंदिनी ॥ मोह रजनी के नाश तेज तरनीके हार भार अवनी के चारु मोदकंदनी के है। ज्ञान नलनी के हरि स्वच्छ रक्षजी के मंजु सीवकमनी के वश्य प्रेमफंदनीके है॥ दानि सुगती के सेव्य सहस फनी के दुष्ट दलन अनीके विधि वेद बंदनीके है। भाग्यवंतही के कार शुद्ध बोधनीके पायँ शोभ वृन्दनीके मिथिलेश नंदनीके है ॥ छप्पै ॥ राम सियापद बंदि भरत मांडवी मनावों। लषण उर्मिला संग चरण पंकज शिरनावों ॥ श्रुति कीरति शत्रुघ्न बहुरि बंदों कर जोरी। करहु कृपा जन जानि सबहि बिनती सुनि मोरी ॥ पुनि सचिव सखा सेवक सकल जोरि पाणि सनमानिके। भगवंत चरण बंदन करत करहु

कृपा जन जानिकै ॥ भुजंगप्रयात छन्द ॥ नमो अञ्जनी गर्भसंभूत कीशं। नमो ज्ञान वैराग्य अम्बोधिईशं ॥ नमो हेम वर्णांग कैशोर रूपं। नमो कोटि कामाभिरामं अनूपं ॥ नमो वीर बाणैत बिख्यात लोकं। नमो भक्त आनंददं हारशोकं ॥ नमोकेलि बालार्क ही ग्रास कर्त्ता। नमो लोक त्रैशोक संताप हर्त्ता ॥ नमो धीर गंभीर श्रीराम दूतं। नमो दुष्ट दर्पापहं वायुपूतं ॥ नमो बुद्धि विद्याकरं तेजराशी। नमो ऋद्धि सिद्ध्यादि दाता विनाशी ॥ नमो मर्कटाधीश सुग्रीव मित्रं। नमो शील संतोष धामं पवित्रं ॥ नमो भूरि वैदेहि शोका-पहारी। नमो कौतुकै बाग बिध्वंसकारी ॥ नमो अक्षहाकीश वीरो अशंका। नमो दाहनं हेम लंकेशलंका ॥ नमो बज्रगातारि माना-पहर्त्ता। नमो लंक उत्पात प्रारम्भकर्त्ता ॥ नमो बद्धवारीश द्रोणा-द्रिधर्त्ता। नमो कालनेमारि संहारकर्त्ता ॥ नमो प्राणसौमित्रदा-नंदकारी। नमो राघवेन्द्राति शोचापहारी ॥ नमो कुम्भकर्णाम्बुदं नादत्राशं। नमो कारणं रावणादी विनाशं ॥ नमो यातुधानारि भूभारहर्त्ता। नमो विप्र गो साधु आनंदकर्त्ता ॥ नमो नन्य श्रीराम भक्ताख्य लोकं। नमो देव वृन्दापहं त्रासशोकं ॥ नमो वंद्य त्रैलोक्य आनंदरासी। नमो मंगलागार दाता सुपासी ॥ कबित्त ॥ ज्ञान गुण वंतधीर साहसी सबलवंत बीर यशवंत कारअंत प्रेत भूत के। शील सम तोष वंत बांकुरोति तेजवंत बुद्धिवंत चातुर अनन्त राशि बूत के ॥ वेदहू पुराण सन्त शारद अनन्त यश गावनालहंत ऐसे अंत राम दूतके। भाग्यवंत आपतंत प्रबल प्रतापवंत नौमि नौमि नौमि पद पद्म वायुपूतके ॥ वेदविद ज्ञान खानि साहेब सुजान दिव्य जा-नत्त जहान गुणदेव वन्दिछोर के। काम क्रोध लोभ मान मोहमद द्रोह सिंधु शोषक अगस्त्य ग्रासकार रवि भोरके ॥ पालन तवानि

दानि कानि दास भाविनास देत शुभ साजि काज तासु सब वोर के। भाग्यवंत रामदूत साहसी कृपाल वीर नौमि नौमि नौमिपद केशरीकिशोर के॥ सवैया॥ जै हनुमान सुजानवली प्रणतारति मोचननाम तिहारो। आगम वेद पुकार यशै निज दासनके बहु काज सुधारो॥ राघवदूत प्रताप महापद सेवत संकट शोच निवारो। पायँन माथ धरै भगवंत द्रवो जन जानि समीरकुमारो॥

दो० बंदौं श्री गुरुदेव पद हरण अखिल भवभार।
विधि हरि हर सेवत जिन्हैं सकल सुमंगलसार॥

बंदौं गुरु पद पंकज धूरी। जासु कृपा नाशै दुख भूरी॥
बचन भानु नभ हृदय प्रकाशा। होत मोह तम सघन विनाशा॥
बंदौं सन्त सभा सुखदाई। जोरि पानि पायँन शिरनाई॥
राम नाम जहँ पोत सुहावा। ज्यहि चढ़ि पतितपार भवपावा॥
सुमिरतजिनहिं सकलदुखनाशै। शमनकुमति उरसुमति प्रकाशै॥
जे बिनु कारण पर उपकारी। कृपासिन्धु सेवक दुखहारी॥
बन्दौं बिप्र चरण जलजाता। नमतजाहि हरि शंभु बिधाता॥
द्विज पद सकल सुमंगल मूला। हरणकठिनकलिकलुषसमूला॥

दो० बन्दौं सुर मुनि नागनर शीश नाय कर जोरि।
जानि दास निज आस उर पूरण कीजे गोरि॥

बन्दौं विधि पद पंकज धूरी। जासु प्रभाव प्रगट जग भूरी॥
बन्दौं सादर वेद पुराना। जेनित करहिं राम गुणगाना॥
बालमीकि आदिक कवि नाना। जिनरघुपतियशविशदबखाना॥
करउँ प्रणाम चरण शिरनाई। करहु कृपा सब होहु सहाई॥
प्रणवों खल जन मन क्रमबानी। परसुख दुख सुख बड़ परहानी॥
बारहिं बार बिनय सुनि मोरी। हरियश करत करब जनिखोरी॥

बन्दौं अवधपुरी सुखरासी । संतत जहँ सियराम निवासी ॥
सरयू सरि बन्दौं सुखदाई । ज्यहिदरशन अघजातनशाई ॥
दो० बन्दौं श्रीदशरत्थ पद कौशलादि सब रानि ।
जिन पाये सुत रामसम दुलराये सुख मानि ॥
बन्दौं सकल अवधपुर बासी । जड़ चेतन खग मृग सुखरासी ॥
बन्दौं जनक नगर सुपुनीता । आदिशक्ति जनमी जहँसीता ॥
बन्दौं जनक सुनैना रानी । जिन जामात लहे धनुपानी ॥
बन्दौं जनक नगर नर नारी । जिन सादर प्रभुरूप निहारी ॥
पुनि बन्दौं सुरसरि वरधारा । पावन करणि हरणि अघभारा ॥
चित्रकूट बन्दौं सुख रूपा । कीन निवास जहां सुरभूपा ॥
बन्दौं सकल भालु अरु कीशा । जिनहिंप्राणसमप्रियजगदीशा ॥
सब सन विनय करौं कर जोरे । पूरण करहु मनोरथ मोरे ॥
दो० बन्दौं तुलसीदास पद गहे कृपाको पन्थ ।
सुलभ जीव उद्धारहित रचि दीन्हे बहुग्रन्थ ॥
गीतावलि कवितावली छंदावलि सुखदात ।
मानस बरवै छप्प अरु कुंडलिका शुभसात ॥
शतसैया बाहुक बिनै रामाज्ञा प्रश्नैन ।
अरु विराग संदीपिनी सिय मंगल सुखदैन ॥
इत्यादिक औरौ बहुत रचे ग्रन्थ सुखधाम ।
पढ़तसुनतजिनकेसुजन लहतसुवांछितकाम ॥
धन्य धन्य तुलसी जगत कृपावन्त बिनु हेतु ।
भवसागर के तरणको रचि दीन्हे दृढ़ सेतु ॥
बार बार करजोरिकै पुनि पुनि शीश नवाय ।
तुलसिदास पदपद्म युग बंदौं मन बचकाय ॥

विद्या बुधि बलहीन मैं दीन तुम्हारो दास।
हरियश चाहत गावनो करिये पूरण आस॥
बंदौं श्रीरामायणहिं सकल जगत सुखदानि।
जीवन धन संतन सुजन राम सुयश षरखानि॥
आगम वेदपुराण पै मथित्यहि तुलसीदास।
काढ़ि सुमानसघृतअमलकीन्हे जगतप्रकास॥

अवधपुरी जग विदित अनूपा। राम घाट पावन सुखरूपा॥
त्यहि समीप सोहत शुभधामा। पूरुब मुखहि द्वार अभिरामा॥
तहँ गुरु वैष्णव दास निवासा। जिनके दरश किहे अघनासा॥
ज्ञान बिराग सकल गुणधामा। राम नाम सुमिरहिं वसुयामा॥
शांतरूप अति मृदुल सुभाऊ। समचित हृदय क्रोध नहिंकाऊ॥
कहँ लगिकहौं अमित गुणभानी। हरि अवतरे मनहुँ निजआनी॥
देश देश के संत अपारा। आवत हैं तिनके नितद्वारा॥
तिनके हेत छावनी छाई। देत तहाँ सब संत टिकाई॥

दो० अशनसुधा सम संतनन्ह करवावहिं बहुभांति।
परमानँद छायो तहाँ रहत सदा दिनराति॥

यह कीरति व्यापी सब ठाँई। जहँ तहँ मिलि संतन सबगाई॥
कह्यों स्वगुरु अस्थान बखानी। अब निज कहौं जन्मभदि भानी॥
अवध पश्चिमै योजन साता। बाराबंकि जिला विख्याता॥
तीनकोस त्यहि पूरब जानौ। ग्राम नरौली नाम बखानौ॥

दो० ग्रामाधिप ताके भये क्षत्रवंश राठूर।
नाम भवानीसिंह ते रहे, धर्म रणशूर॥

हरिपद छंद॥ कौशिक गोत्र शिषाहै दक्षिण औरहु दक्षिण पाँयो। कात्यायनहैं सूत्र सुशाखा माध्यंदिनी सुहायो॥ ययुर्वेद

उपवेद अहै धनु अरु शिव देव बखानो । पाराशर वशिष्ठ अरु सांकृत त्रय परवर यइ जानौ ॥

दो० भये भवानीसिंह के सुवन भिखारी सिंह ।
प्रगटभये तिनके बहुरि सुवन अयोध्यासिंह ॥
तिनके सुत जन्मेउभै नीतिपाल भगवंत ।
नीतिपाल मोसन अधिक देत सबै म्वहितंत ॥
वनइससै सत्ताइसै सम्बत शुक्र सुवार ।
श्रावण नौमी असितको भयो सुजन्म हमार ॥
काव्यकला में निपुण नहिं पूरण हृदै न भक्ति ।
विनयकरौं ताते सबहि निजनिज दीजे शक्ति ॥
श्रीगिरिजाप्रति शंभु जो कही कथा समुझाय ।
तुलसीकृत मानस सुमत कहिहौं मैं स्वइगाय ॥
एकबार कैलास शिव राजत शिवा समेत ।
जानि समय करजोरिकै बोली शिवा सचेत ॥
नाथ कृपाकरि हरि कथा कहौ मोहिं समुझाय ।
जो सुनि प्राणी पावई भवनिधि पार सुभाय ॥
प्रथम कहौ श्रीरामको जन्म चरित सुखदानि ।
बालकेलि बरणौबहुरि सकल सुमंगल खानि ॥

गीतिकांछंद ॥ मुनि संगगे जिमि रामलच्मण असुरगण जिमि मारयऊ । मखराखि मुनिगण अभय करि जिमि नारि गौतम तारयऊ ॥ ज्यहि भाँति कीन्ह्यो भंगधनु मुख नृपन कारिख लायऊ । जिमि मेटि संशय जनक परशाधरहि गर्व छड़ायऊ ॥ जिमि ब्याहि चारौं बन्धु सानँद्र अवधपुर आवत भये । ज्यहिं भाँति रघुपति राजहित भय सजंतपुर मंगल नये ॥ जिमि बचन पितु रघु-

बीर सानुज सहित सियवनको गये। जिमिराम केवट भेटि उरभरि तरत जिमि सुरसरि भये॥ जिमि कीन वास प्रयाग प्रभु जिमि बालमीकि मिलापभो। किय चित्रकूट निवासपै जिमि शमनंसबकर तापभो॥ जिमि अवध आय सुमंत दशरथ प्राण जिमि त्यागन किये। जिमि भरतकरि नृप क्रिया सादर संग सब पुरजन लिये॥ जिमि राम जहँ तहँ जाय सब अवलोकि प्रभु सुखपायकै। प्रभु सीख धरिशिर पादुका लै अवध निवसे आयकै॥ पुनि राम सानुज सहित सिय ज्यहि भाँति बन आगे चले। करि स्वच्छ कानन मारि बहुखल वृन्द मुनिगन दुखदले॥ जिमि पंचबटि कै थानलखनहि ज्ञान उपदेशत भये। ज्यहि भाँति शूर्पणखाइ तहँ जिमि काननासा त्यहि हये॥ जिमि शमनभे खरदूषणादिक हाल जिमि रावण सुन्यो। मारीच सन जिमि जाय बरण्यों सुनत जो त्यहि मनगुन्यो॥ करि कपट ज्यों मायाहि सिय दशकण्ठ खल हरि लैगयो। जिमि राम कीन्ही क्रिया निजकर गीधकी जग यश छयो॥ पुनि मारि ज्योंहि कबंध शबरिहि सुगति प्रभु दीन्ही सही। ज्यहि भाँति पंपासरहि आये भई नारद बतकही॥ जिमि पवनसुत मिलि रामको सुग्रीव पहँ जिमि आन्यऊ। श्रीराम ज्यों बधि बालि यकशर तिलक सुगिरहि ठान्यऊ॥ कपिनाथ ज्योंहित खोज सीतहि बिपुलकीश पठायऊ। जिमि बिवर पैठेकीश मिलि संपाति हाल बतायऊ॥ जिमि नांघि सागर पवनसुत बैदेहि को धीरज दियो। बिध्वंसि कानन जारिपुर जिमि गवन पुनि प्रभुपहँ कियो॥ कुशलात कहि सिय राम सों जिमि राम सँग सेना लिये। जिमि नीरनिधि के तीर सह सबभीर प्रभु डेरा किये॥ ज्यहि भाँति आयो तहँ बिभीषण तिलक जिमि सारयो प्रभू। जिमि बाँधि सेतु समुद्र उतरे रामसँग

कपिदल सभू ॥ ज्यहि भाँति अंगद लंक गय दशकंठ बल ज्यों दलमल्यो। जिमि राम शाशन भालु कपिदल जाय गढ़ लंका हल्यो ॥ भय युद्ध बहुविधि दोउ दिशि घटकर्ण आदिक ज्योंमरे। घननाद भो पुनि बद्ध ज्यों दशकंठ रघुपति रणभिरे ॥ ज्यहि भाँति मारयो राम रावणं राज दै त्यहि भायको। सिय सहित राजे एक थल कृत विनय मुनि सुरनायको ॥ चढ़ि यान पुष्पक राम सिय सह बंधु कपि सेना लिये। करि अभय सुरमुनि साधु सज्जन गवन जिमि अवधहि किये ॥

दो० अवधआय मिलि भरत जिमि कोशलराजकुमार।
राज बैठि दीन्हे सबहिं सुख सम्पदा अपार ॥
सो सब चरित पुनीत अति कहिये मोहिं कृपाल।
सुनि गिरिजाको प्रश्न तव बरणत भे शशिभाल ॥

सो० स्वइ यह चरित पुनीत तुलसिदास मानस रच्यो।
हरण सकल भवभीत रामभक्ति दायक अमल ॥
स्वइ हरियश सुखदाय गिरा सुपावन करनहित।
कहब कछुक मैंगाय निजमति सम मानस सुमत ॥

दो० मानस मत ते जो कछू उछरै चारित कोय।
करियन संशय सो कहूँ ग्रंथनहीं में होय ॥
राम चरित दायक अमल रामभक्ति सुखदानि।
सोई चरित पुनीत में धरे सुयामें आनि ॥
ताते मैं यहि ग्रंथको भक्ति शिरोमणि नाम।
धरयों सुजन जन बूझिकै दानि भक्ति अभिराम ॥
वनइससै पञ्चास शुभ संम्वत माधवमास।
कृष्ण बृहस्पति दुइजको कीन्ही कथा प्रकास ॥

दो० सीतापति पदपद्मयुग बन्दौं बारहिबार।
जिनको सुयश प्रताप गुण पावत निगम न पार॥

कवित्त॥ हार दुष्कृताके त्रात औनि देवताके पाल साधुवृन्दताके दातृ भुक्तिमुक्तिताके है। दुष्टकाष्ठताके दाहताके कारताग्नि चंडदास नै स्वशोकताके नाशकारताके है॥ भाग्यवंत ताके लोक सिंधुतार ताके पोतरक्षक सुधर्मताके पुष्ठ वर्मताके है। ज्ञानही प्रकाश ताके मोहतम नाशताके कारतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ दानि बुद्धिताके बल तेज विद्यताके कार वृद्धि भाग्यताके शक्ति भक्ति विज्ञताके है। कार अर्चताके फलदातृ वाँछिताके टार अन्ध अज्ञताके भानुहार मन्दताके है॥ भाग्यवन्त ताके कार जीवशुद्धताके दास मीन अम्बुताके दानि ऋद्धिसिद्धिताके है। काम क्रोध लोभ ताके द्वन्द मद मोहताके हारतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ ध्यान करताके हर पापताप ताके सुखश्य सर्वताके जागज्योति ज्ञानता के है। शील समताके तोष धीर क्षमताके दिव्य वीतरागताके ही प्रकाश कृत्यताके है॥ हार पीरताके धुरधार धीरताके धर्म वर्म संसृताके पोत पुष्ट मैसुताके है। भाग्यवन्त सत्यताके शान्ति नय सौख्यताके दातृतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ पापतूलताके ज्वार तेज गोत्रताके नाश मोहनकताके तेज चण्ड सविताके है। कोश मृदुताके सींव शुभ्र मंजुताके लोक तीनि हेरि ताके समनानता सुताके है॥ भाग्यवन्त ताके मैसु पुण्यके पंताके कन्द तीनि तापताके पाल छन्द वाटताके है। दानि फल अर्थ ताके धर्म काम मोक्षताके स्वच्छतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥ सेव्य करताके भरताके हरताके औ सुरेशहू गणेश ताके आस नित्यताके है। कारुणीक ताके भूरि दिव्य यशताके वोर चारिहू पताके लोक तीनि

व्यापताके है॥ भाग्यवन्त श्रोणताके चीकने चमकताके चोखे चटकीलताके खानि मंजुताके है। दीनजन पालताके दुष्टगन शालताके कारतांघ्रि जनकसुताके भरताके है॥

इतिश्रीमन् अयोध्यासिंहवर्मात्मज भगवन्तसिंहविरचितायां भक्तिशिरोमणि प्रभुवन्दनावर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो॰ श्रीगुरुचरण प्रणामकरि सिय रघुबर हियआनि।
रामचरित भगवन्त कछु मतिसम कहत बखानि॥

सवैया॥ दशकंठकियो तपपुंजदियो वर आननचारिं तबै त्यहिका। बरपाइ जिते नरनाग सुरासुर कालहु त्रासकरै यहिका॥ मनभावत राजअखण्डकरै नितनावत माथ सबै ज्यहिका। लहि वैभव नीच अनीति रच्यो जगमें न खल्यो खल सो क्यहिका॥ धर्म दिये करि लोपसबै जगब्यापि अधर्म अनन्तरहाहै। पातक भार अपारभयो बसुधासन सो नहिं जातसहाहै॥ कम्पित भूसुर साधु सबै प्रभुसों करजोरि पुकारि कहाहै। नाथ अनाथननाथ हरौ दुख नाथ निशाचर देत महाहै॥

दो॰ सुनत विनय वानी गगन भई सकल सुखखानि।
नरतनुधरि कोशलपुरी हरिहौं तव दुखदानि॥
सो सुनि सानँद सकलसुर आये निज निज धाम।
अब बरणौं श्रीरामको जन्मचरित अभिराम॥
अवधपुरी जगमें विदित पावन परमअनूप।
करत राज सानंद तहँ सहित नारि मनुभूप॥

सवैया॥ बहुकाल कियो नृपराज तहां यकबार विचारतभो मनमा। बयबीतिगई बिषहीम सबै बनजाइ भजी हरि या पन मा॥ सुतकोदय राज सनारिगयो चलि आपु सुतीरथ नैमिषमा। मन

कायगिरा भगवन्तलग्यो चित दम्पतिको हरिपायँनमा ॥ देखि महातप दम्पतिको प्रगटे प्रभुशक्ति सहानँदकारी। मांगहु जो बर-भाव मनै करजोरि गिरा तब भूप उचारी॥ आपु समान चहौं सुत नाथ पतोहलहौं इनकी अनुहारी। जानि यही रुचि रानिकह्यो भगवन्त पुजी मनआश तुम्हारी॥

दो० सुनि हरिबाणी मुदित मन भय बर बांछित पाय।
कछु दिनपर तनुत्यागि द्वौ बसे अमरपुरजाय॥
कौशल्या दशरथ स्वई भये अवध नृपआय।
तिनको सुयश प्रतांप गुण कहौं कौनविधि गाय॥

छप्पै॥ एकबार मनमाहिं भूप यह कीन विचारा। दिह्यो पुत्र विधि नाहिं भयो पन चौथहमारा॥ गुरुहि सुनायो जाइ तुरत आ-पन दुखभारी। कह बशिष्ठ धरुधीर भूप है हैं सुतचारी॥ मुनि तुरत बोलि शृङ्गीऋषै सुतहित कीन्हो जाग तब। भइ सिद्धि यज्ञ हवि पाय नृप किये उभै त्यहि भागसब॥ सादर तब भूपाल बोलि प्रिय रानिन लीन्हा। कौशल्यहि दिय अर्ध अर्ध के द्वैदल कीन्हा॥ कै-केइहिदिये एक शेषके युगुलबनाये। कौशल्या कैकई हाथ महि-पाल गहाये॥ तिन मुदित सुमित्रहि भाग द्वउ दीन परम सुखपाय कै। इमि कछुककाल सुखयुतगयो जन्मसमयभयो आयकै॥

दो० जन्मसमय श्रीरामको जानि मुदित तिहुँलोक।
सचराचर आनँद जगत भयो गयो तनशोक॥
अवधपुरी राजत परम बाजत गगन निशान।
बरषि सुमन जयजयकरत शोभित विबुधविमान॥

सवैया॥ मासभयो शुभयोग नक्षत्र सुबार विराजतहै सुखदाई। मध्यसमय तिथि नौमिघरी शुभ ताछिन में प्रगटे रघुराई॥ आनँद

मंगलचार तिहूँपुर देव सबैभरि फूलनलाई। नाचत नाकनटी बहु किन्नर हैं भगवन्त रहे गुणगाई॥ जलदाभ कलेवर श्यामलसे छवि कोटिनकामकि लाजतहे। सरसीरुह श्रोण विलोचनचारु मयंकमुखामित राजतहे॥ श्रुति कुण्डल नाक बुलाकभुलैं तिलकाति सुभालम छाजतहे। शिरसोहत क्रीट त्रिखण्ड प्रभाकर जालनकी द्युति भ्राजतहे॥ कामकमानबनी भृकुटी झलकैं अलकैं शुभकम्बु गलापै। हासविलास हरै मनको छबिभूलत सो नहिं एकपलापै॥ सोहत मोतिनमाल हिये द्युतिजात कही नहिं सोचपलापै। कोटिनकाम सवामकरैं लखि वारन मातु स्वरूप ललापै॥ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर आयुधपाणि सबै निजधारी। अंग अलंकृत है सबही अति पीतपटांगलसै छबिकारी॥ पंकजपायँ सचिह्न मनोहर धारतध्यान जिन्हैं त्रिपुरारी। देखि अलौकिक रूप नखाशिष यों करजोरि कह्यो महतारी॥

दो० त्रिभुवनपति सब जगत जो कृत संभव थितिनास।
स्वइ मम जठर निवास किय यह बड़ि है उपहास॥
तौ प्रभु पूरब जन्म की कही कथा सब गाय।
पुनि बालक ह्वैकै लगे रोदन आगे माय॥

रोदन सुनत परम सुखमानी। आईं तुरत तहां सब रानी॥
नख शिख सुतछबिधाम निहारी। कहि न जाय उर आनँदभारी॥
भूपति पुत्र जन्म सुनि पावा। परमानन्द प्रेम उर छावा॥
तुरत बजनिहन बोलि पठाये। सहित सुमंत आपु गृह आये॥
शिशुमुख सुखद देखि सुखपावा। गुरु वशिष्ठकहँ वेगि बुलावा॥
नंदीमुखहि श्राद्ध तब कीन्हा। विविधदान महिदेवन दीन्हा॥
गो गज हेम तुरँग बहु याना। दीन्हे पट भूषण विधि नाना॥

याचक सकल बोलि पुनि लीन्हा। जो जेहि भाव भूप स्वइ दीन्हा॥

दो० जन्मसमय श्रीरामके दान जु दिय महिपाल।
सो न सकैं कहि सहसमुख याचक भये भुवाल॥

नगर नारि नर परम सुखारी। करहिं आरती तन मन वारी॥
निरखि रूप सादर अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे॥
देवन नभ दुंदुभी बजाई। बरषि सुमन कहि जय रघुराई॥
गावहिं गीत मुदित गंधर्वा। जैजै करत व्योम सुर सर्वा॥
अवधपुरी शोभा अति छाई। घर घर बाजत अनँद बधाई॥
बंदनवार पताक सजाये। द्वार द्वार प्रति कलश धराये॥
सरयूसरित कोलाहल भारी। सोहत निर्मल धवल सुवारी॥

दो० पुरशोभा अद्भुत अमित क्यहि विधि कहौं बखानि।
परब्रह्म श्रीरामजी भये प्रकट जहँ आनि॥

छप्पै॥ विधिहरि शंकर शेष जासु चरणन्ह शिर नावत। नेति नेति श्रुति शास्त्र ध्यान योगीजन लावत॥ लोमश शुक सनकादि जासु लखि मर्म न पावत। नारद सहित गणेश विमल कीरति कलगावत॥ स्वइ रामचन्द्र भगवंतहित सुलभ जीवजग उद्धरण। नर देहधारि भो नृपसुवन चरण कमल ताके शरण॥ रोलाछंद॥ जन्मभूमिके पास बीसधनु उत्तरधामा। दशमी दिवस अनूप जयो केकइ सुततामा॥ भवन सुमित्रा धनुष तीस दक्षिण दिशिगायो। हरि दिन पावन पुत्र उभै तहँवां तिन जायो॥ तीनि यवांगुल होत मुष्टिकां अंगुलचारी। षट् मुष्टिकको हस्त हस्त चौधनुष बिचारी॥ द्वै सहस्र धनुकोश क्रोश चौयोजन जानौ। योजन शतको देश देश शतमंडल मानौ॥ शतमंडलको खंड खंडनौ बसुधागाई। राम जन्म उत्साह ठाँव सबही रह्यो छाई॥

दो० भूप सदन आनँद परम बाजत विविध निशान।
पुर नरनारि प्रसन्न अति करहिं विमल गुणगान॥
भूपति भंवन भीर भइ भारी। गावहिं गीत मनोहर नारी॥
कंचन थार आरती वारी। रोचन दधि दूर्वाक्षत धारी॥
करहिं आरती बारहि बारा। कहि न जाइ उर हर्ष अपारा॥
निउछावरि पट भूषण करहीं। बारबार शिशु पायँन परहीं॥
रहे बाजि बाजन बहु भाँती। ठांव ठांव आनँद सरसाती॥
नृपमनमुदित बोलि सबयाचक। तिनहिं दानदेकीन्हअयाचक॥
पुर शोभा अद्भुत अतिछाई। देखत बनै बरणि नहिं जाई॥
सकल भुवनपति राम गुसांई। आपुइ प्रगट भये जहँ आई॥
दो० त्यहिपुर की शोभा कहत सकुचत गणप अनन्त।
क्यहि विधि सो वरणन करै बदन एक भगवन्त॥
धूप धूम नभ मण्डल छायो। सावन घन घमंडि जनुआयो॥
रव निशान गरजत करि शोरा। गावहिं गुण बंदी जनु मोरा॥
वेद ध्वनि भूपति गृह होई। दादुर शोर करत जनु सोई॥
सोहहिं कलश अनेकन द्वारा। दमकहिं जनु दामिनीअपारा॥
देव सुमन झरि बरषा लाई। अर्क जवास दुष्ट दुखदाई॥
आनँद पाथ सिमिटि पुर आवा। पूरण याचक भये तलावा॥
सुर महि साधु सुखी ससिभयऊ। खलनसमाज धूरि मिटिगयऊ॥
यह सुख सभय परै तव जानी। जब हियबसहिं राम धनुपानी॥
दो० राम जन्म उत्सव परम रह्यो सकलपुर छाय।
शेषमहेश गणेश विधि सोसुख सकत न गाय॥
अथ श्रीरामजन्म बधाई पद॥ बाजे अवध नृप द्वार बधैया।
तिथि नौमी मधुमास पुनर्वसु जायो सुवन कौशला मैया॥ वरषत

सुमन देव नभ संकुल मागध भाट सूत गुण गैया। घर घर मंगलचार अवधपुर हाट बाट चौहट छबि छैया॥ गृह गृहते ललना बहु बनि बनि लैकर मंगल द्रव्य सुहैया। दल फल फूल दूब दधि रोचन गावत राग परम सुखदैया॥ सानँद भवन भूप चलि आवहिं निरखि निहाल होहिं चहुँ भैया। आरति करहिं मुदित छबि देखत पुनि पुनि परत ललन गहि पैंया॥ जोसुख चहत सदाशिवशंकर ब्रह्मादिक सुर सकल सिहैया। स्वइ भगवन्त सुलभ पुरवासिन निरखि रूप सानुज रघुरैया॥ रे आजु अवधपुर आनँद छायो। कौशल्या केकई सुमित्रा सुवन अनूपघरी शुभ जायो॥ अवधपुरी नर नारि अनंदित बाजत बिपुल बधायो। मंगल गान निशान नगर नभ विबुध बिमानन छायो॥ भूसुर वेद बंदि विरदावलि गावत सुयश सोहायो। बंदनवार पताक कलश ध्वज चौकैचारु पुरायो॥ ब्रह्मादिक शंकर ज्यहि ध्यावत निगम नेति करिगायो। भक्तहेतु स्वइ स्वामि प्रगटि भू दशरथ सुवन कहायो॥ धन्य भाग्य पितु मातु गोद भरि सादर जिनहिं खेलायो। पावन जन्म हेतु भगवंतहु चरित चारु कछु गायो॥ कवित्त॥ छायो धूम धाम लोक लोकनै अपार देव साजिकै बिमानव्योम दुन्दुभी बजाये हैं। मंगलांग चारिदश चौदहो भुवन होत वेद औ पुराण देव दिब्य यश गाये हैं॥ साधुजन भूमि धेनु सानँद स्वछन्द बास पाप ताप दोष दुःखत्रास नाश पाये हैं। रूपके अगार भक्ति मुक्तिके भँडार चारु चारिहू कुमार ये अगार भूप जाये हैं॥

इतिश्रीमन्अयोध्यायांसिद्धचर्मात्मजभगवन्तोसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणि
ग्रन्थश्रीरामजन्मोत्सुववर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो० गुरु पद पद्म प्रणाम करि रामसिया शिरनाय।
बाल चरित श्री रामको कहौं सकल सुखदाय॥

चैत्र शुक्ल चौदशि रवि बारा। लिपवाये अजिरादि अगारा॥
मणिमय चारु चौक पुरवाये। कलश थापि घृत दीप धराये॥
सादर मुनिवर चरण पखारे। श्रुतिविधि गौरि गणेशपधारे॥
पूजा कीन्ह अनेक प्रकारा। धूप दीप नैवेद्य अपारा॥
शुभ स्वरूप रचि भीति बहोरी। पुनि हरदी पीठा लैघोरी॥
चित्रित सदन किये बहुभांती। सुखमाअमित न सोकहिजाती॥
सजि पट भूषण सुवन सुमाई। लै उछंग बैठीं छबिछाई॥
पुनि पूजे षट कलश सोहाये। तंदुल सेंदुर हरदि चढ़ाये॥
धूप दीप कीन्ही सुखदाई। घी गुर सानि अशन करवाई॥
करि पुट पानि रानि शिरनायो। जाति बंधु तब भूप बुलायो॥
विविध भांति भोजन करवाये। विप्रन्ह सकल दक्षिणा पाये॥
देत अशीष चले निज धामा। यहिविधिकीन्हछठीअभिरामा॥

दो० गो गयन्द बाजी पुरट मणि मुक्ता समुदाय।
विप्रन्ह दिये नरेश बहु सोनहिं कहे सिराय॥

माधव कृष्ण बाण भृगुबारा। गुरुबशिष्ठ कहँ बोलि भुवारा॥
कीन्ह बारहौ वेद विधाना। जाइ न सो मुख एक बखाना॥
ध्वज पताक तोरण रचवाये। बहु विधि बंदनवार बनाये॥
गोमय अजिर लिपाय बहोरी। चारि चौकतहँ मणिमय पूरी॥
मुनिवर पितर देव पुजवाये। रानिन सुवन समेत बोलाये॥
लै सुत बैठीं चौक मँझारा। विप्रन्ह वेद गिरा उच्चारा॥
गावहिं गीत सकल पुरनारी। मनअति मुदित देखिसुतचारी॥
मुनिवर सघृत होम करि ताही। नाम लिख्यो पीपरदल मांही॥

दो० पूजन करि त्रैबार स्वइ शिशु श्रुति दीन्ह सुनाय।
हिरण्य गर्भ कहि राशिको नाम सकल सुखदाय॥
रमत रमावत जो सबहि सर्वोपरि गुणधाम।
तासु राम अस नाम कहि सकल लोक अभिराम॥
जन्म पुष्य भा द्विपदको वर्ण ह ईश्वर जानि।
नाम हेमनिधि राशिको मुनिवर कह्यो बखानि॥
बिश्व भरत पोषत ज्वई सर्वोत्तम गुणधाम।
भव भंजन यश जासु कहि तासु भरत असनाम॥
अश्लेषा पद प्रथम को जन्म अहै अभिराम।
वर्ण डकार इकार स्वर डील तेज निधि नाम॥
जाके सुमिरण मात्रते होइ शत्रु क्षय आसु।
पुत्र सुमित्रा केर लघु नाम शत्रुहन तासु॥
अश्लेषा चरणादिकर जन्म ड अक्षर जानि।
स्वर इकारहै नाम शुभ डील धराधर भानि॥
सब लक्षण युत भूमिधर रामभक्त गुणधाम।
तनय सुमित्रा जेष्ठ त्यहि कहि लक्ष्मण शुभनाम॥

स० भाग्यबड़ी तिन जीवनकी इनसों निशिबासर जे रतिलैहैं। लोक सदा सुखदा तिनको यश तीनिहुं लोकनमें न समै हैं॥ होइहि पार बिना श्रमसो भव किंकरहू यमकेन सतैहैं। रामकृपा भगवंत निते परलोकहु लोक महा सुखपैहैं॥

दो० यहिबिधि मुनिवर नामधरि पुनि-पुनि दीन्ह अशीश।
परमानँद भगवंत सुनि रानिन्ह सहित महीश॥

स० चारिहुरूप अगार अनूपम देखत मातु सबै सुखपावैं। बारहिबार लगाय हिये मुख चूमि मयंक प्रमोद बढ़ावैं॥ संतत ध्यावत

शम्भु जिन्हैं जन योगि निरन्तर ध्यान लगावैं । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावैं ॥ जाहि अखेद अभेद अछेद अजन्म अनंत सदा श्रुति गावैं । शङ्कर शेष सुरेश जलेश दिनेशहु जाहि निरन्तर ध्यावैं ॥ नारद शारद व्यास गणेश थके कहि जा यश अन्तन पावैं । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावैं ॥ जा पदपङ्कज ध्यान किहे अघ जन्म अनेकन को जरिजावै । नाम लिहे भव सिंधु अपार बिना श्रम गोपद सो तरिजावै ॥ संतत लोक अनंदकरै परिणाम सुभाय परम्पद पावै । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावै ॥ जननी सुत सुन्दर गोद लिहे मुख शोभित षोड़श पूर्ण कला । अरबिंद शुभाक्ष सजै भृकुटी मनमोहत भाल डिठौन भला ॥ चिबुकाधर चारु कपोल बने छबिदेत अनंत मुकंबुगला । बसुयाम बसौ भगवंत हिये यह रूप अनूपम रामलला ॥ अति पंकज पाणि सजै पहुँची नख ज्योति अपार जगै अमला । उर बाल बिभूषण नाभि भली त्रिवली शुभदायक चारिफला ॥ कटि चारु नितम्ब उरू शुचि जंघ बिलोकत जो अघ पुंजदला । यह रूप बसौ भगवंत हिये रघुबंश बिभूषण रामलला ॥ बनजारुण कोमल पायँ भले अरतालिस चिह्न बने अमला । अँगुरीन दिपै नख ज्योति मनो नग लाख जड़े कल कंजदला ॥ छवि देखत मातु निहाल सबै करि मानत जीवन को सफला । शिव मानस पंकज भृंग बसौ भगवंत हिये छबि रामलला ॥

दो० स्वस्ति कोण बसु पुष्प श्री हलमूशल अहिबान ।
ऊर्ध्व रेख ध्वज बज्र नभ अंकुश पादपपान ॥
मुकुट चक्र यंव दंड नर सिंहासनं शुभमाल ।

छत्र चमर चौबिंश पद दक्षिण चिह्न विशाल ॥
गो पद पृथ्वी कुम्भ दर अर्धचन्द्र षटकोण।
जम्बूफल जिव चंद्रिका शक्ति बिंदु त्रै कोण ॥
अमी कुंड सरजू गदा मीन पताक मराल।
त्रिवली धनु तूणीर विधु वीणा बंशि बिशाल ॥
चतुर्बिंश शुभ चिह्न ये बायें पद अभिराम।
महारमायण में अमित कह्यो महातम बाम ॥
यह छबि नखशिख लालकी देखि देखि पितु मात।
महामोद पावत मनहि दिवस न जानहिं जात ॥
यकदिन सुत अनरस लख्यो कह्यो कौशलामाय।
काहुहि दुष्टै नारिजनु दीन्हेसि नजरि लगाय ॥

क० भोरहीते आजु मेरो लालन उदास माई पीवत न दूधनेकु रोवै बार बारहै। बैठेहू न ठाढ़ेरहै सोवत न पालने में कौन मैं उपाय करौं शोचही अपारहै॥ बोलिलै बशिष्ठ बेगि आय माथ हाथधारि पढ़िकै नृसिंह मंत्र मेट्यो फेर फारहै। जासु नामलेत कोटि संकट शमन होत ताहि मातु कौशला करावै फूँकझारहै ॥

नृसिंह मंत्र तंत्र शास्त्रे ॥

ॐ नमोनृसिंहाय हिरण्यकश्यपवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूतप्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनीकीलोन्मूलनाय स्त म्भोद्भव समस्त दोषान् हनहन शरशर चलचल कम्प कम्प मथ मथ हुंफट हुंफट् ठंठः महारुद्र जापियत स्वाहा ॥

एकबार शिव सहज सुभाये। पावन भस्म सकल तनलाये ॥
करभृंगी डमरू लै लीन्हा। कोशलपुरी पयाना कीन्हा ॥
घर घर आगम कहत सिधाये। अवधनाथ द्वारे चलि आये ॥

सुनि कौशल्या लीन्ह बुलाई। आसन दीन परम सुखदाई॥ करि आदर बहुबिधि महतारी। मेले चारु चरण सुतचारी॥ पुनि पुनि दीन्ह अशीश पुरारी। भये छकित छबिसिंधु निहारी॥ गोद मोद निधि बालक लयऊ। तनअतिपुलकमुदितमनभयऊ॥ तब कर कमल जोरि करि माता। बोली बचन परम सुखदाता॥

दो० स्वामी गुण आछे सकल कहिये यामें जौन।
जो कछु माँगिहो आपु सो देब सत्य हम तौन॥
सुनि बोल्यो योगी बचन सुनहु कौशला माय।
बड़े भाग्यको पुत्र तव गुण नहिं कहे सिराय॥

तोटक छन्द॥ अति सुन्दर बालक मातु अहै। गुणसागरको कहि पार लहै॥ कृत दर्शन शूल हरी सबही। यहिते सुख पुञ्ज मिली तुमही॥ कछु ह्वैहहि काल व्यतीत जबै। मुनि माँगन ऐहहि एक तबै॥ तिनके सँग देहहु जाय इन्हैं। हति निश्चर देहहिं सुःख तिन्हैं॥ मिथिलापुरको पुनि जावहिंगे। धनुखंडन के यश पावहिंगे॥ दय पत्र बुलाय बरात तबै। अति होइहि ब्याह उछाह सबै॥ चहुँ बन्धु बिवाहि पुरावहिंगे। यश निर्जर पावन गावहिंगे॥ शुभगीत छन्द॥ यह करी अद्भुत कर्म सबही दुष्टगण संहारिहै। सुर साधु महि द्विज पालि तीनिहुँ लोक यश बिस्तारिहै॥ सुख भूरि सम्पति पूरि तुम्हरे भवन कबहु न खांगिहै। यह सत्य सब हम कहत माई झूंठनहिं वसु लागिहै॥

सो० पुनि बोल्यो स्वइ बैन सुनहु केकई मातु तुव।
पुत्र सकल गुण ऐन लक्षण कहौं बिचारि सब॥

शुभगीत छन्द॥ यह भक्त मन क्रम बचन रघुपति चरण रति अति लाइहै। वसु याम रामहि ध्यान रसना नामरस शुचिपाइहै॥

पुर जनक होइहि व्याह पावन सुयश तिहुँपुर छाइहै। इमि कहउँ आगम सत्य माई व्यर्थ नहिं कछु जाइहै॥

सो॰ सुनहु सुमित्रा माय सकल सुलक्षण पुत्र तव।
आगम कहौं सुनाय सत्यहि सो नहिं झूठ कछु॥

शुभगीत छन्द॥ अति वीर द्वउ रणधीर बाँके शत्रु जाके डर डरै। श्रीराम पद पाथोज रति मन काय बच संतत करै॥ सिथिलेश पुर सँग राम इनहूं व्याहि पुनि सब जाइहैं। भगवन्त जग यश गाइ पावन पार भवनिधि पाइहैं॥

सो॰ सुनि शिवके शुचि बैन भईं मगन रानी परम।
मुक्तामणि बहु दैन लागीं सुवन छुवाय सब॥

छन्द॥ धरि माथ इनके हाथ दीजे नाथ आशिर्वादही। कल्याण जाते होइ संतत डीठि मूठि विनाशही॥ नहिं निकट आवे रोग कबहूं बाल रोदन ना करे। इमि कहत जोरे हाथ जननी बारबारहि पांपरे॥

सो॰ सुनि योगी सुख पाय बोल्यो सुनु माता वचन।
हरिहौं अबहिं नशाय डीठि मूठि बाधा सकल॥

छन्द॥ कबहूं न रोई बाल पलना गोदमें सुख सोइहै। सब ठाँव रहिहै नेक तनमें रोग एक न होइहै॥ यहि भाँति कहियोगीश पुनिकरि नादभृंगी चलिदियो। भगवन्त चारिउ बन्धु सुन्दर रूप धरि लीन्ह्यों हियो॥

सो॰ सुनि शिवके वर बैन भईं मुदित माता सकल।
सुन्दर शिशु सुख दैन बार बार लावहिं हियें॥

दो॰ नख शिख सजि भूषण बसन वर पलना पौढ़ाय।
मातु झुलावहिं लालनहिं हर्ष न हिये समाय॥

क० श्यामतन पीतझीन झांगुली अनूप साजि लालनै सु-आनि मध्य पालनै लिटावई। देखि रामचन्द्र रूप माधुरी सुमोद कन्द प्रेमसों उमंगि चारु बालकेलि गावई॥ शम्भु सनकादि शुक नारदादि योगिवृन्द कोटिनै उपायकृत्य ध्यान जोन आवई। भाग्यवन्त स्वामिसो अगट्ट आनि भूपभौन ताहि मातु कौशला सुमोदसों झुलावई॥ लघु लघु लाल लाल कोमल चरण जंघ जानु औ नितम्ब कटि सिंहही लजैरही। सुन्दर गँभीरनाभि मंजुल उदर बाहु पांहुची विशाल शोभ कंजपानि दैरही॥ चारु चिबुकाधर कपोल दन्त नासिकाक्ष पूरण मयंक आस्य पुंज भास ह्वै रही। भाग्यवंत रामशिशु रूप ना बखानि जात अंग अंग प्रत्य कामकोटि छवि छैरही॥

दो० भाद्र कृष्ण रवित्रैदशी पुष्य नक्षत्र अनूप।
भूम्युपवेशन रामको कीन्ह मुदित मनभूप॥

बिप्र वृन्द गुरु बोलि पठाये। विविध भांति मंगल सजवाये॥
तनि बितान आंगन लिपवाई। पूजि बराहस भूमि सुहाई॥
पुनि अन्हवाय बाल सुखदाता। भूषण पट सजि बहुविधि माता॥
अस्त्र शस्त्र बहु बस्तु धराई। बैठावत महि सुत सुखदाई॥
गावहिं मंगल सादर नारी। करहिं वेदध्वनि भूसुर भारी॥
बहु विधि दान याचकन पाये। देहिं अशीशा मोद मन छाये॥
कोशल पुरी मुदित नर नारी। निरखहिं छबि तनमन धनवारी॥
त्यहि अवसर कर हर्ष अपारा। को अस कहि जो पावहि पारा॥

दो० भूपति रानी मुदित अति पुनिपुनि सुवन निहारि।
बिप्रन दीन्हे दानबहु मणि भूषण धनवारि॥
जासुनाम जपि सकलसुख बिनुश्रम आवत धाय।

ताके सुखहित मातु पितु करत अनेक उपाय॥
यहिसुख सहित,दिवस कछु गयऊ। पुनि अनप्राशन आवत भयऊ॥
द्वितिया मार्ग शुक्क शशि पूषा। मिथुन लग्न शुभ परम अदूषा॥
भूपति मुदित बोलि मुनिराजू। अनप्राशनकर सज्यो समाजू॥
विविध भांति भोजन बनवाये। षटरस चारि भांति जो गाये॥
जाति बन्धु नृप न्योति पठाये। सुनत सकल सादर चलिआये॥
तब सुत सकल उबटि अन्हवाई। सुन्दर पट भूषण पहिराई॥
लै नृप गोद सुभन सुखदाई। ससधार मुख ग्रास छुवाई॥
पुनि अँचवाय पोंछि मुखलीन्हा। दान मान बहुभाँतिन कीन्हा॥
पुत्रन मातु निकट पहुँचाये। पुनि सबहिन भोजन करवाये॥
औने पान दीन्हे सब काहू। कहि न जाय जस भयोउछाहू॥

सवैया॥ कहिजात न सो सुख एक महा मुदछाय रह्यो नृपके सदनै। गुण गावत मागध सूतभलो यशपावन बंदि कदम्बभनै॥ भगवन्त विलोकत मातु पिता सुत जीवनको निज धन्यगनै। मुनि योगिन दुर्लभ स्वामि स्वई बश प्रेमभयो दशयान तनै॥

कुण्डलिया॥ रामै जननी एकदिन पलना मध्य सुताय। इष्टदेव श्रीरङ्ग हित पाकबनायो जाय॥ पाकबनायो जाय मुदित पुनि भोग लगायो। सुतहि विलोक्यो खात पलन सोवत स्वइ पायो॥ पायो भ्रम मनमाहिं निरखि पुत्रहि दैठाये। रहीठगीसी मातु बिलोकत पावत रामै॥ मातै विकल विलोकिकै राम दियो मुसक्याय। अद्भुतरूप अखंड निज तब दीन्ह्यो देखराय॥ तब दीन्ह्यो देखराय रोम रोमन प्रतिजाके। कोटि कोटि ब्रह्मांड अमित सूरज शशि ताके॥ ताके सरि सर सिन्धु भूमि हरि शम्भु विधाते। देखि चरित बहु भाँति बिनै कीन्हीं तब मातै॥ सवैया॥ करता जगके

तुमहीं प्रभुहौ तुमहीं सब जीवनके भरता। भरता सब दासनके तु-
महीं तुमहीं परिणाम अहो हरता॥ हर तामरसोद्भव विष्णु रचौ तु-
महीं पुनि भार क्षमा धरता। धरता अवतार दशौ तुमहीं तुमहीं
शमनासुर के करता॥

॥दो॰ सुनि बोले यह चरित मम कतहुं न जानै कोय।
जननिउ कह कबहुँन हमें तव माया प्रभु होय॥
एवमस्तु कहिरूप शिशु भये बहुरि श्रीराम।
नाना विधि लागे करन पुनि चरित्र अभिराम॥
चैत्र शुक्ल नौमी परम पावन अति सुख रूप।
वर्ष गांठि श्रीरामकी कीन्ह मुदित मन भूप॥

सवैया॥ आनँद मंगल आजु अहै पुर वर्ष कि गाँठि सु राम-
ललाकी। बाजत बीन रबाब मृदंग सुसोहत ताल भली तबला
की॥ पाय सुदान अशीसत याचक पूरण आशाभई सकलाकी।
गावतहै भगवन्त सदा कलकीरति दायक चारि फलाकी॥

दो॰ चारि भुवन चारौ सुभग चारौ फल दातार।
चारु अजिर खेलैं नृपति लखि सुख लहै अपार॥

सवैया॥ नृप आँगन खेलत चारितनै छबिजात कही नहिं सो
सकला। मुख पूरणचंद्र बिलोचन चारु बिलोकत जो अघओघ
दला॥ तन श्यांम विभूषण बाल सजै झलकै द्युति पीत झँगा
अमला। छबि सागर नागर बासकरौ भगवंत हिये नित रामल-
ला॥ कचकुंचित चिक्कन शीश भले अति उन्नत भाल सुभाग्य
थला। दरग्रीव महाछबि सीव मनोहर मंजु अतीवसजे कठुला॥
झँगुली तन श्याम सुपीत लसै घन मध्य मनो चमकै चपला। भग
वंत उरांतर नित्त बसौ प्रभु भव भय भंजन रामलला॥ पग नूपुर

किंकिणि लंक सजै सुनि शब्द मुनीशन ध्यानचला। शुचि नाभि गँभीर भली त्रिवली उर आयत दाम लसै अमला॥ पहुँची युग पाणि अनूपबनी मुख सुन्दर पंकज मान दला। नितबासकरौ भगवंत हिये करुणा सुखसागर रामलला॥ विहरैं नृप आँगन बाल चहूँ छवि देखत मातु सुखी सकला। चलिबैंयन बैंयन दूरिकछू पुनि लागत लोटन भूमितला॥ कहुँ छाहँ बिलोकि धरै झपटैं किलकैंयन कै मुख चंदकला। छबिसिंधु वसौ भगवंत हिये नित बंशाबिभूषण रामलला॥ हित खेलन माँगत चंदकबौ करि रोदन ठानत हैं मचला। कबहूँ लखि कागधरैं त्यहिको चलु बैंयन बैंयन भूमि थला॥ कहुँ मैयनओरझकैयन दै तुतराय सु बोलत बोल भला। गुण सागर आगर रूपबसौ भगवंत हिये नित रामलला॥ विहसैं लखि भूरि खिलौननको दमकैं दँतियां द्युति ज्यों चपला। तुतराय पुकारतमातनको सुनि आँनँदभूरि लहैं सकला॥ दुलराय उठाय लगाय हिये छबिदेखत अंबककै अपला। करिये प्रभुबास हिये भगवन्त सदा जनरंजन रामलला॥ मातुगहे कर लालनको सिखवैं शुभचालन आँगनमाहीं। पावँ उठाय धरावत भूपर नूपुरशब्दसुने किलकाहीं॥ छोड़त हैं अँगुरी जननी न गिरैं डर पायँनमें लपटाहीं। कौनप्रकार कहौं छबिसो मनभावतहै मुखआवत नाहीं॥ दीनरसे बैठाय महीपर आपहु बैठिगई तहँ माई। बस्तु अनेक दिखावसिं हैं ढिग राखत बातनमें भरमाई॥ प्रायसुबीच चले भजि बैंयन दीन खिलौनन डारि तहाँई। मातुगहे जब धावति है तब ठानत आँगनमें मचलाई॥ देहरि द्वारपैर फिढ़िलें तब मातु उठाय न्धावत पारे। धूरिगई भरि अंगसबै निज आँचरसों जननी गहिझारे॥ लागतं रोवन लालतबै लै गोदलगाय हिये चुचुकारे। आँसुनपोंछि पि-

यायसु क्षीरहि वारणके धन प्राणदुलारे ॥ सुन्दरसेज सवँारि लला लै पौढ़त मातु महासुखपावै । खन्तमनैयनके कहि भैयन बारहि बार हिये लपटावै ॥ कोमल पाणिगहे मुखचूमत प्रेमअतीव न हीय समावै । सो सुखमा भगवन्तकहै किमि भावतही मुखमें नहिं आवै ॥

दो० जाके गुणगण अगम अति पावत निगम न पार ।
सो प्रभु अपनें भक्तहित करत चरित्र अपार ॥
काकभुशुण्डी दिवस यक आयो भूपति भौन ।
त्यहिसन जो चारितकियो कहौं कछुक अवतौन ॥
जानुपानि धाये धरण ताहि देखि रघुनाथ ।
भाज्यो सो जहँ जहँ गयो पाछेहि देख्यो हाथ ॥

कवित्त ॥ फिरत भ्रमित मन त्रसित न थिरहोत बिकल बिलोकि राम दीन्ह्यो मुसक्यायहै । हँसतहिजाय मुख दीख जो चरित्रहीय अमित अनूप मोपै जातसो न गायहै ॥ लोक लोकपाल यमकालहू त्रिदेवजाल भूमि सर सरित पयोधि बनवायहै । देव मुनि सिद्धि योगि नाग नर भूत प्रेत विविधप्रकार दीख सृष्टिसमुदाय है ॥

दो० देखत सो चकित भयो बिहसे तब रघुराय ।
बिहसतही पुनि कागस्वइ बाहर निकस्यो आय ॥
योंही नित नवचरित बहु करत कृपा सुखकन्द ।
जो सुनि सादर जीवकर छूटिजात भवफन्द ॥

छप्पै ॥ सतचित आनँदरूप कृपापूरण गुणरासी । सर्वोपरि परधाम सदा सबके उरबासी ॥ बन्दत पद विधि शम्भु जाहि सनकादिक ध्यावैं । आगम निगम पुराण शेष ज्यहि नेति बतावैं ॥ स्वइ स्वामिभक्तहित भूप्रगटि कृतचरित्र भवभय हरण । मनवचन काय भगवन्तगहु चरणकमल ताके शरण ॥ कवित्त ॥ धन्यहै अवध

जामें लीन अवतार राम धन्य आँगनाई जामें खेलको खिलतहैं। धन्य तात मातु सब देखहीं समोद जौन चारित अनूप रामचन्द्रजू करतहैं॥ धन्य धाम धन्य बाम धन्य लोग धन्य भाग धन्यधन्य नैन जौन रामको लखतहैं। धन्य अन्न धन्य वस्त्र धन्य क्षीर नीर धन्य धन्य धन्य सर्व हेत राम जो लगतहैं॥

इतिश्रीमन्नृअयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभाक्तिशिरोमणिग्रन्थ
श्रीरामचन्द्रबालखीलावर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

दो० बन्दौं श्री अवधेशसुत चारिउ परमउदार।
कृपा दृष्टि करि देहु बर पूजै आश हमार॥
मातु सकल आनँद भरी देखत श्यामलगात।
यथा रंक गथ पाय बहु हर्ष न हिये समात॥

रागबसन्त॥ नृप अजिर खेल खेलैं कुमार। कहि जात नहीं सुखमा अपार॥ पदपद्म चारु शुभलाललाल। कृत शब्द मधुर नूपुर सुजाल॥ दलकमल पदज अतिशय बिराज। नखज्योति मनो उडुगण समाज॥ मणि जटित पुरट किंकिणि विशाल। वर लंक शोरसो करत जाल॥ नाभी अनूप शुभरोमराज। उर बिप्रपाद श्री बत्सभ्राज॥ पहुंची अनूप करकंज सोह। लखि कंठ मंजु छवि कंबु मोह॥ कठुला विचित्र नख बाघ माल। बरबदन बिंदु मसि लसत भाल॥ कुलही अनूप शिर सुभग अंग। झँगुली सुपीत द्युति पटल भंग॥ छबिधाम राम आनंदकंद बसौ भाग्यवन्त उर ब्योम चन्द॥

दो० रामरूप शोभा अमित क्यहि विधिकहौं बखानि।
शेष महेश गणेश बुधि जाको कहत सकानि॥
ब्रह्मा शिव सनकादि ज्यहि पावत ध्यानहु नाहिं।
सो प्रभु नाना विधि चरित करत भूपगृह माहिं॥

जिनके इन पद प्रेम नहिं नहिं चरित्र आधार।
मातु जठर जन्मे वृथा केवल पुहुमी भार॥
माता यकदिन अजिर लिय हती ठाढ़ि रघुनन्द।
कह्यो तात देखहु विशद उयो व्योममें चन्द॥
सो सुनि यकटक रामजी लागे चितवन ताहि।
बारबार करकंज सों निकट बुलावत वाहि॥
तुतुरे तुतुरे कहत हैं मातु लेब हम याहि।
भूख लागि खाबै यहै और कछू हम नाहि॥
अस कहि पुनि लागे तबहिं रोदन भूमि मँझार।
मानतहैं नाहीं करत जननी यत्न अपार॥
तस्करके बल राति है दुर्बलबल भूपाल।
मूरुखके बल मौनहै केवल रोदन बाल॥

स० मातुकरै तब शोच हिये हम नाहक चन्द इन्है दिखरावा। कौन उपाय करौं नहिं मानत मांगत है मनको निजभावा॥ और चहौ व्वइ खाउ लला तुम जातकहूं शशि नाहिंन खावा। भाँति अनेक कह्यो जननी पर लालन के मन एक न आवा॥ आवत गोद न रोवतहै कहि चंदहिलेब अबै हमभाई। शोचत मातुखड़ी मन में क्यहिभाँति भलाहम चन्द्रहिपाई। जो लयदेउँ ललाकरमें खवि-जाहिरहै यहि काल चुपाई। जानतहै न अबूझकछू इम काकहिकै इनको समुझाई॥ तो यक भाजनमें भरिकै जललै कर ऊपर दीन उठाई॥ आवहु चन्द्रबुलावतहैं हित खेलनके तुमको रघुराई। फेरि धरयो धरणी महँ सो कहि लेहु लला गहि चन्दहि लाई॥ ताहि विलोकि हँसे रघुनायक धारणको करकंज चलाई। भाजनमें कर डारिधरै पुनि बाहर आवत सो शशिनाहीं॥ झांकतहैं पुनि पात्र

तरे तहँ देखिपरे नाहिं तापरछाहीं। तौ पुनि रोइकहै जननी हम लेब शशी निजहाथनमाहीं॥ वारिविषे यह झलकतहै पर हाथन में गहि नेकु न जाहीं॥

दो० अतिसमीप वह चन्दहै कहौतो लावों धाय।
सुनि लालनके वचनवर कह्यो मातु मुसक्याय॥
तव मुखलखि सकुचै शशी जावै दूरि पाताल।
ताते आवै हाथनहिं कारण याही लाल॥
सुनि विहँसे प्रभु मातुतब लीन्ह्यो गोद उठाय।
दूधप्याय दुलराय पुनि दीन्ह्यो ताहि भुलाय॥
रामचन्द्र विधुतन्तलखि मातुलहत मनतन्त।
देहु नाथ निज तन्तवर गावत यश भगवन्त॥

यहिविधि कृपासिंधु रघुराई। करत चरित भक्तन सुखदाई॥
देखि मातु पितु अति सुखपावैं। महामोद मनमाहिं बढ़ावैं॥
कछुक दिवस बीते पितुमाता। चूड़ाकर्म कीन्ह सुखदाता॥
तीसरवर्ष शुक्र सितआयो। भृगुदिनतिथिदशमीशुभपायो॥
कन्यालग्न जानि सुखदाई। पठये बोलि भूप मुनिराई॥
सुनिमुनि मुदित भूपगृहआये। विधिवत चूड़ाकर्म कराये॥
गान निशान वेदधुनि होई। याचकजन पावत मनजोई॥
नृप सबजाति बन्धु बुलवाई। सादर सबकहँ अशनकराई॥
विप्रन दानदीन बहुभाँती। देहिं अशीष न मुखकहिजाती॥
अधिकउछाह अवधपुर छाये। घरघर बाजहिं मोदबधाये॥
सब नर नारि मुदित मनमाहीं। सुखसंयुत निशिवासर जाहीं॥
रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी। जननि जनक पावहिंसुखभारी॥

दो० सुखमा सुखंवहअमितअति कहिकविसककोताहि।

षट्मुख शारमुख वेदमुख अगमनिगम गमनाहि॥
खेलहिं आंगन चारिउ भाई। करहिं अनूप चरित सुखदाई॥
अति सुंदर चारिउ सुकुमारा। पावहिं लखि मुद मातु अपारा॥
राम श्याम तन अमित सुहायो। पीत झँगुलि भूषण छबिछायो॥
ठुमुकि ठुमुकि आँगन बिचधावैं। एकहि एक लपटि पुनिजावैं॥
लरखराय गिरि फिरि उठि लपटैं। भाजत निरखि छुवन यकझपटैं॥
मणि खम्भन झाँकहिं निजछाँहीं। लागत नाचन देखत ताही॥
चलहिं भाजि पुनि हँसिहँसिगाई। पाछे लागि जात तिन्हमाई॥
माताहि लखि करिकै मुखरूखा। कहहिं लागि हमरे अति भूखा॥
जासुरूप सचराचर माहीं। व्यापित लखि कउ पावत नाहीं॥
जासु रोम प्रति भुवन अपारा। जो प्रभु पालत सब संसारा॥
रोवत खड़ जननी के पासा। नैन नलिन आये चुइ आँसा॥
प्रेम उमगि जननी उरलाये। आँशु पोंछि पयपान कराये॥
॥दो॰ पुनि सुन्दर लैकै अशन सबहिन दियो खवाय।
॥ बारिप्याय मुख पोंछि करि लीन्हेउ गोद उठाय॥
यहिप्रकार शिशु चरित सुहाये। करहिं अनेक जाहिं नहिंगाये॥
मुनिजन जाहि ध्यान नितलावैं। निगमागम ज्यहि नेति बतावैं॥
सो निजभक्त हेतु तनुधारी। करत चरित संसृत दुखहारी॥
इमि सुखयुत कछु कालबितायो। पाँचौ वर्ष मार्ग शुभआयो॥
दशमीधन रेवति उडुराजा। कर्णबेध कर साजि समाजा॥
नृप गुरु बिप्र बोलि सब लीन्हे। जाति कुटुम्ब निमंत्रण कीन्हे॥
मंगल साज सकल गृहसाजे। भाँति भाँति बाजन बहुबाजे॥
बिमल वेदिका अजिर बनाई। अति बिचित्र तहँ चौक पुराई॥
हेम कलश दीपक धरितापै। रचना अमित जाइ कहि कापै॥

शिशुन सवाँरि मातु लै गोदा। बैठीं चौक मध्य सह मोदा॥
पुत्रनकर धरि विविध मिठाई। कछुक बोरि दधि दीन खवाई॥
सींक बोरि रोचन श्रुति लाये। स्वर्णकार तब निकट बुलाये॥
दो० परमानँद ते झटितअति लीन बेधि शिशुकान।
भई निछावरि विविध विधि करहिं नारि बहुगान॥
॥ रोलाछन्द ॥ लीन्हे तब भूपाल बोलि सब याचक वृन्दा। धन मणि भूषण चीर भूरिदै कीन्ह अनन्दा॥ करवाये पुनि अशन स-वहि सादर सुखमानी। विप्रन दीन्हेदान अमित अस्तुति नृपभानी॥ मुदिताशिष सब देहिं चिरञ्जीवें सुतचारी। दिन दिन इनते नाथ हमहिं होई सुखभारी॥ गावहिं गुण नभ देव सुमन संकुल झरि लाये। कर्णबेध उत्साह जाहिं मुख एक न गाये॥
दो० जिनके नाम प्रतापते जन्म मरण दुख जाय।
भूप भवनसो प्रेमवश रह्यो कान छेदवाय॥
परम प्रसन्न भूप सब रानी। देखत सुत चारो छवि खानी॥
कोशलपुर नित नवल उछाहू। चहुँदिशि उमगत मोद प्रवाहू॥
मंगल मोद नव्यनित ताके। मंगल मय सुन्दर सुत जाके॥
छबि समुद्र नहिं बरणि सिराई। लखि शतकोटि मदन बलिजाई॥
अब्जअरुणपद कोमल लाला। जगतनखनद्युतिविशदसुजाला॥
रुनु भुनु धुनि पैंजनियां करहीं। मुनि रब ध्यान मुनिनके टरहीं॥
कहिनजायकटि किंकिणिशोभा। उर मणिमाल देखि मनलोभा॥
बाहु बिशाल बिभूषण भूरी। करमृदु करज सनख द्युतिरूरी॥
दो० पूरण शशि सुखमा बदन. चिबुकाधर द्विजमंजु।
नासा शुचि सीपंज लसत ललित अक्ष नवकंजु॥
लघु लघु कुंडल करण बिराजें। गोल कपोलन पै छबि छाजें॥

मन्मथ धनुसम भृकुटि बिशाला। तिलक अनूप सोह बरभाला॥
शीश चौतनी सुभग सुहाई। पीतबसन भूषण छबिछाई॥
नखशिख सुत सुंदर सुखदाता। निरखिनिहालहोहिं पितुमाता॥
सानुज सखन सहित रघुराई। खेलहिं खेल महीपन जाई॥
भोजन हित नृप बोलि पठावैं। सखनसमाजछांड़ि नहिंआवैं॥
कौशल्या तब आपुइ जाई। चलहिंभाजितकि आवतमाई॥
कहहिजननिचलि सुतकछुखाहू। बोलत तुमहिं बैठि नरनाहू॥

दो० सुनि जननीके बचन प्रभु आये चलि तब साथ।
बिहसि भूप रज झारि ढिग बैठाये गहि हाथ॥

किरीट छन्द॥ जेंवत पै थिरचित्तनहीं लखि औसर भाजिचले किलकावत। आवत फेरि समीप नहीं बहु भाँतिन सो महिपाल बुलावत॥ संगति जाय सखान मिले रचिखेल अपारन दुंदि मचावत। जा सुखको तरसैं बिधि शंकर ताहि सुभाय क्षमापति पावत॥ ग्रामबधू छबि देखि छकैं घरजाय सखीन सुबैन सुनावहिं। धन्य सखी जिन वासपरोस बिलोकत जे निशि द्योस रहावहिं॥ हौं जबते लखि रूप सखी उन मोहिं नहीं तबते कछु भावहि। चाहतहै मन मोर यहीलिय गोदकरौं बसुयाम खिलावहि॥ खेलतद्वार बिलोकि कबौ पुरलोग उठाय उछंग मँझारहिं। चूमि निशेश मुखामल कोकर सुंदर मिष्ट सुमेवहि धारहिं॥ भाँति अनेकन प्यार करैं रुखताकि पठावत वेगि अगारहिं। कोशलनाथ कि भाग्यबड़ी भगवन्त लहै कहि शेषन पारहिं॥

दो० कबहुँ प्रात मिलिझरि-सखा द्वार पुकारत आय।
खेलन हित सुनि तुरत तब जायं जगावत माय॥

सुंदर छंद॥ निशि बीतिगई सुत प्रातभयो उठियेसुर सन्तनके

हितकारी। द्युति क्षीणभई नभ तारनकी चकवाक लह्यो सुख पेखि तमारी॥ निज संगसखा सब खेलनको बहुबार गये नृपद्वार पुकारी। अब सोवनकी नहिं बेरखड़ी भगवन्त जगावति हैं महतारी॥ सुनि सुंदर बैनउठे रघुनन्द कृपा सुखकन्द स्वछन्द अघारी। बदनाम्बुज सो कुम्हिलाय रह्यो बशआलस नैन सकैं न उघारी॥ श्रुति कुंडल लोल कपोलनपै अलकैं घुँघुवारि लसैं अतिकारी। जनु चंदहि घेरि घटा भगवन्त छटापट पीत किहै उजियारी॥ सुखधाम बिराजत राम महाछबि कोटि मनोज लजावनि हारी। जननीयुग नैन चकोर सशांक समास्यरही पल रोकि निहारी॥ पुतरी जिमि दारु बिलोकिरही बशप्रेम दशा तनकेरि बिसारी। छबिपान सुधासमकै भगवन्त मुखाम्बुज धोवत लै शुचिवारी॥

दो॰ बदन धोइ करवाइ कछु रुचिर कलेऊ माय।
भूषण बसन सवाँरि तन दीन्ह्यो द्वार पठाय॥

कवित्त॥ शोभ मुखपानकी अधर अरुणानकी मधुर मुसकानकी चिबुक दँतियानकी। नासा छबिमानकी कुण्डल द्युतिकानकी कमान भौंहतानकी कमल अँखियानकी॥ कुंचितालकानकी झलक टोपियानकी सुपीत बसनानकी लसनि बपुषानकी। भूपके ललानकी समान सूखमानकी न आन ऊपमानकी बखानै सोन मानकी॥ सानुज सखान राम खेलैं चाउंगान मोदपुंज ऊमगान जो बखानि पावनाहीमैं। चंगको उड़ावैं आसमान लौं चढ़ावैं एकएकसों लड़ावैं पेच लावैं भूरि ताही मैं॥ भांवरा नचावैं भूमि मन्नको मचावैं एक कोडरा खचाय बैठि जावैं आपु वाहीमैं। लूकि पुनि जावैं एक ढूंढ़ने सिधावैं देखि चावही बढ़ावैं कौन भांति सो सराही मैं॥ श्यामश्याम अंगमैं सुपट्ट पीत रंगमैं कि बिज्जु

क्रंद संग में सुसूखमा अभंगमें। खेलकी उमंग में प्रमोदकी तरंग में सु सारयू धरंग में सखान बन्धु संगमैं॥ कांकना जोरानमें सुभाँवरें भरानमें कि गिन्नके बँधानमें उताल पौन भंगमें। बारके निदान में सचात्रमान सानमें सुबन्धु लै मकान में चलैसो जोर जंग में॥

बामछन्द॥ महीपति बालक चारुचहूं गुण सागर नागर रूप बिशाला। निशापति आनन कानन कुण्डल मण्डित जागि रही द्युति जाला॥ घटा नव अंगम पीत पटा छविकेन भयो लखि सोहि निहाला। करौ भगवन्तहि धाम सदा प्रिय बाम सकोशलपाल कृपाला॥

दो० बाल केलि यहि विधिअमितकरहिं सुचारि उभाय।
पुरजन परिजन मातु पितु पावहिं सुख समुदाय॥
एकबार नृप द्वार पै आयो मर्कट एक।
ताहि देखि रघुनाथ तब ठानत भे यह टेक॥
हमहुँक यक बचाप्लवग दीजे तात मँगाय।
सुनि नृप दिये मँगाय बहु लिये न सो रघुराय॥
कह बशिष्ठ नृप जासु हित रोइ रहे श्रीराम।
कीश केशरी पुत्र स्वइ हनूमान त्यहि नाम॥
भानु तनय सुग्रीव ढिग रहत अहै स्वइ कीश।
दूत पठै मँगवाइ त्यहि लेइअवेगि महीश॥
सुनि नृप पठये तुरत चर लैआये त्यहि जाय।
हरषित भे रघुवीर तब भावत मन कपिपाय॥
जहँ जहँ खेलत खेल प्रभु तहँ तहँ राखत संग।
कहेउ कथा संक्षेप यह बरणौं अपर प्रसंग॥

छप्पै॥ एकवार नृप द्वार वधिक पक्षी यक लायो। देखतही

रघुनाथ हाथ लै ताहि उड़ायो॥ कह्यो बधिक स्वइ बिहँग भूप मम देहु मँगाई। सुनत राम त्यहि पक्ष गाड़ि महि बृक्ष जमाई॥ फल फरत फुटत निकसत बिहँग निरखि चरित चकित बधिक। धन अमित दीन त्यहि भूप तब सबके मन सुखभा अधिक॥

सो० ज्यहि प्रभु इच्छा माँहि प्रगट होत क्षणमें जगत।
अधिक नहीं कछु ताहि महिमा यह बरणन किये॥

स० एकदिना यक बानिकलै नग बेचन को नृपद्वार परायो। देखनके मिस हाथम लै रघुनायक सो दर कूप चलायो॥ मांगनसो जब लाग वहै तब चाहमते तरु एक जमायो। फूलि फरैं नग भूरि झरैं महि कौतुक यों दिनसप्त रहायो॥ पुरलोग अपारन भारनलै नग जाय अगारन माहिं धरयो। इमि लूटि भई बहु भांतिन सो पुनि बृक्ष स्वई तकि नाहिं परयो॥ यह देखि सुबानिक साह चके अति मानस मध्य उछाह भरयो। भगवन्त चरित्र अनूप बिचित्र यथामति सादर गानकरयो॥

उमाराम नित नवल चरित्रा। करहिं एकते एक बिचित्रा॥
इमि कछु दिवस गये चहुँभाई। भये कुमार सकल सुखदाई॥
गेरहें वर्ष शुक्र गुरुबारा। माधवतिथि दशमी सुखसारा॥
भूप बोलि सादर ऋषिराजा। कीन जनेउ साजि सबसाजा॥
गये पढ़न पुनि चारिहु भाई। गुरुप्रसाद बिद्या सब पाई॥
चारिवेद षटशास्त्र पुराना। और कला चौंसठिहू जाना॥
ब्रह्मज्ञांन ज्योतिष ब्याकर्णा। धनु बिद्या पिंगल जलतर्णा॥
शालिहोत्र अरु नृत्य रसायन। कांब्यादिकचातुरिस्वरगायन॥
कोकसार सामुद्रिक जानो। और वेदविद्या पहिचानो॥
यह चौदह बिद्या अभिरामा। बरणौं अब बेदन के नामा॥

ऋग यजु साम अथर्वण चारी। बेदनके यइ नाम विचारी॥
मीमांसा बैशेषिक न्याया। सांख्य योग बेदान्त गनाया॥
ये षटशास्त्र हिये अनुमानौ। नाम पुराणन के अब भानौ॥
मीन भविष्य विष्णु शिव बावन। लिंग नारदी अग्नि सुहावन॥
ब्रह्म गरुड़ कूंरुम भागवता। पद्म स्कन्द ब्रह्मबैवर्ता॥
अरु बाराह मारकण्डेई। कहि ब्रह्माण्ड अष्टदश येई॥

दो० कहेउ पुराणन नाम ये अष्टादश में गाय।
सुनौ कलनके नाम अब पढ़े जौन रघुराय॥

हरिपद छन्द॥ नाटक बाद्य नृत्य गावन सुर लेखन बेधन हीरा। कुसुम बिकार फूल मय शय्या राग दशन अँग चीरा॥ मणिमहि चित्र रङ्गसाजी जल ताड़न ग्रन्थन माला। शयन रचन शृङ्गार साज रचि मुकुट चन्द्रिका बाला॥ गन्धयुक्ति जलबाद्य करण के पत्रभङ्ग बहुरूपा। भूषण योजन इन्द्रजाल कर लाघवकारक सूपा॥ क्रीड़ासूत्र आसवादिकरस सूची बाणहि घाला। बीनाबाद्य पहेली बूझन छलबिद्या प्रतिमाला॥ पुस्तक बांचि नाटिकाख्यायिक काव्य समस्या पूरै। बिद्याबाण कर्म्म तच्छनपर उक्ति तर्कसोतूरै॥ बेत निवार खाटदिक बीनन पारिख रत्नसो नारी। माली युक्तिमोल मणि जानन खग मृग युद्ध सँभारी॥ शुकशारिका प्रलापोत्सादन केश सुमार्जन ठांनै। म्लेक्ष बिकल्प देश सब भाषा मूकप्रश्न को जानै॥ फूल रथादि दारु योषित विधि मनथिर बचन प्रवीना। पिंगलकोश बिकल्प क्रियाविधि काव्य मानसी कीना॥ छलितक योग बस्त्र गोपन विधि द्यूत खेलको ज्ञानै॥ क्रीड़ाकर्ष बालक्रीड़ा सब सभा चांतुरी जानै॥ दायक विजय पुराण कहन में अति चातुरी बढ़ाये। इति बशिष्ठ रघुनन्दनजीको चौंसठि कलापढ़ाये॥

दो० अचिरकाल विद्या सकल पढ़े सुचारिउ भाय।
दै दक्षिणा प्रणाम करि आये गृह हरषाय॥

इतिश्रीमन्श्रयोऽध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थश्री रामचन्द्रबालक्रीड़ाकरनविद्यापढ़नवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

सवैया॥ पालन साधु महीसुर सज्जन भंजन भवभय शोक-दलाके। बुद्धि प्रकाशन शायक अज्ञ बढ़ायक भक्तिलता नवलाके॥ पोत भवार्णव रक्षक धर्मन वर्म सुदायक चारि फलाके। बंदत हैं भगवन्त सदा पदपंकज श्री अवधेश ललाके॥

दो० यक दिन अति आनन्द युत राम कृपा सुखकन्द।
मज्जनकृत सरयू सरित सहित सखानुज वृन्द॥
असुर एक आयो तहां पठयो रावण ताहि।
मगररूप ह्वैकै प्रभुहि लियो मेलि मुख माँहि॥

सवैया॥ फारि उरांतर ते निकसे प्रभु देखि सुखी भय बालक सारे। खायलिये जिनके खलडिंभ लिये सवकादि मनो निजधारे॥ सो सुनि मातु पिता पुरलोग भये मनमाहिं अतीव सुखारे। अद्भुत यों नितनव्य चरित्र करैं भगवन्त सु औधदुलारे॥

दो० कोशलपुर ज्यहि मग जहां जाहिं निकरि चहुँभाय।
होहिं मुदित नर नारि सब देखत छवि समुदाय॥

चौपैया छंद॥ कबहुँक निज साथालय रघुनाथा बंधु सखन युत जाहीं। सरयू सरिता में चढ़ि नवकामें केलिं अनेक कराहीं॥ कबहुँक लयगेंदा सकल समोदाख्यलहिं जाय इकठौरें। कबहुँक बरवाजी निज निजसाजी चढ़ि ठानें घुड़दौरें॥ इमि चरित अनंता कृत भगवंता परम सुखद भवहारी। मुनि जन मनरंजन कलुष विभंजन पुरजन आनँदकारी॥ सानुज रघुराई सरयु नहाई करि

पूजन यक संगा। भोजन सुखकारी रुचि अनुहारी पावहिं सहित उमंगा॥ ताम्बूलन खाई पुनि सब भाई आये सभा महीपा। भय सकल सुखारी रूप निहारी रघुकुल अमल सुदीपा॥ करि नृपहि प्रणामा सानुज रामा गये बैठि पितुपाही। त्यहि औसर शोभा कवि असकोभा बरणि सकै जो ताही॥

दो० भाग्य बिभव अवधेशकर को कहि पावै पार।
जिनके गृह साकेतपति राम लीन अवतार॥

एक दिवस यक बिप्र कि गाई। डारिसि मारि एक मृगराई॥
सो अति दुखित भूपके पासा। आइसकल निज हालप्रकासा॥
सुनि रघुनाथ प्रणत दुखहारी। करतल चाप रुचिर शरधारी॥
तुरत जाइ प्रभु ताहि प्रचारा। आवत निकट ताकि शरमारा॥
पर्‌यो धरणि ह्वै गन्ध्रब रूपा। बिनय करत जयजय सुरभूपा॥
जय प्रभु प्रणतपाल भव मोचन। कृपा बारिधर पङ्कज लोचन॥
जय रघुबंश बिभूषण रामा। हरण कोटि सङ्कट तव नामा॥
बड़ अपराध नाथ मैं कीन्हा। दीनदयाल मेटि सब दीन्हा॥

दो० मैंहौं पूरबजन्मकर गन्ध्रब अति छबिवान।
शक्रसभा महँ नाथ नित करत रह्यौं बरगान॥

त्यहि समाज नारद यकबारा। किये गान प्रभु चरित उदारा॥
तब ठठाइ मैं हँस्यो कृपाला। सुनि मुनि दीन्हींशाप कराला॥
सिंह सरिस तैं शब्द मचाई। हो खल सद्य सिंह बन जाई॥
मरिहैं निजकर जब रघुराई। तब उद्धार तोर ह्वै जाई॥
नाथ समय स्वइ आयो आजू। कीन्हकृपाल सकल ममकाजू॥
यहितन मैं दारुण दुख पायों। प्रभुप्रसादअब सकल नशायों॥
कहिअस चरणकमल शिरनावा। राम कृपा निजलोक सिधावा॥

पुनि रघुपति भूपति पहँ गयऊ। तहँ स्वइ विप्र कहत असभयऊ॥

दो० कह्यो विप्र स्वइ धेनु मम दीजे भूप मँगाय।
सुनि नृप कहलीजे अपर चाहौ जेती गाय॥

कुण्डलिया॥ आवै समय न फेरि सो जो कछु जावै बीति। झरि तरु दल लागै नहीं सन्तत याहीरीति॥ सन्तत याहीरीति समिध जरि बहुरि न होई। भई बिगत बयजौन ताहि पुनि पाव न कोई॥ कोई अवसर चूकि बृथा पाछे पछितावै। ताते धरु द्विज धीर धेनु गइ बहुरि न आवै॥

दो० लेहु अपर द्विज धेनु बहु पुनिपुनि कह नरनाह।
मानत नहिं चाहत लखन प्रभुप्रभुता अवगाह॥

तब लक्ष्मणहि कह्यो रघुराई। लावहु जाय ढूंढि द्विजगाई॥
सहित विप्र तिन यमपुर जाई। कह्यो इहां आई द्विज गाई॥
कह यमराज जोरि युग हाथा। आई ममपुर सुरभि न साथा॥
तब चलि सप्त पतालन देखा। विप्र गाय कतहूं नहिं पेखा॥
सप्त स्वर्ग पुनि ढूंढ़त भयऊ। मिली न तब बैकुंठहि गयऊ॥
तहौं सुरभि कर खोज न पाये। तब लक्ष्मण गोलोकहि आये॥
करत जहाँ गोपाल निवासा। जाइ सकल निज हालप्रकासा॥
तुम्हरे लोक विप्रकी गाई। आई होइ देहु मँगवाई॥

दो० सुनि निज सुरभिन ते तबै दीन्ह्यो धेनु मँगाय।
भयो मुदित मन माहिं अति सोहन द्विज गोपाय॥

पुनि चलि जाय दीख साकेता। कहि न जाय विभु प्रपति जेता॥
तहँ देख्यो पुनि सीतहि जाई। सुखमा अति अद्भुत प्रभुताई॥
देखि अमित शोभा सुख पावा। लक्ष्मणसहित विप्रशिरनावा॥
दीन अशीश निकट बैठाई। पूछी मिजपति कथा सुहाई॥

तब प्रभु चरित लषण सबगावा। मुनितन पुलक मोद मनछावा॥
तब करजोरि कह्यो द्विजबाता। को पति कहाँ गयो तवमाता॥
अवध नृपति दशरथ अँगनाई। तहँ अवतार लीन तिन्हजाई॥
कछु दिन गये जनकपुरमाहीं। हमहुँ आइ प्रकटब पुनि ताहीं॥

दो० सुनि सीताके वचन द्विज शुचि सुन्दर सुखदैन।
सकल लोकपति राम कहँ जानि हिये अतिचैन॥
सिय इच्छा बिनुश्रम अवध गये आइ ततकाल।
कह प्रभु द्विजपाये सुरभि नायो तब पदभाल॥

कवित्त॥ जैति जैति राम तो प्रभावहै अपार नाथ अज्ञताके वश्य मंदबुद्धि मैं न जानी है। आपुके समान ईश दूसरो न ईश और लोक है न आन ज्यो सु आपु सूखदानी है॥ कीरति कलाप लोक लोकनै प्रसिद्ध आपु भाग्यवंत दीख मैं वियोन स्वामि सानी है। फेरि पंकजाक्ष कोर ओर दासहेरि नाथ कीजिये क्षमासो जौन ढीठतातिठानी है॥

दो० सुनत वचन सनमानि बहु बिदा किये द्विजसोइ।
गयो भवन अतिमुदितमन प्रभुप्रभाव जिय जोइ॥

सवैया॥ रामचरित्र विचित्र महा कहि कोकवि कोविद पारहि पावै। नेति वदै ज्यहि वेद सदा चतुराननह्रक अगम्य लखावै॥ शेष थकै कहि पारनहीं अरु शारदकी वर बुद्धि लजावै। पावन हेत गिरा भगवन्त कछूक यथामति सादर गावै॥

सुनहु शिवा संतन सुखदाई। बहुविधि चरित करहिं रघुराई॥
कबहुँ प्रात उठिकै भगवाना। सानुज करि सरयू अस्नाना॥
करि भोजन ताम्बूलन खाई। सहित मोद मन चारिउ भाई॥
लीन्ह सकल निज सखा हँकारी। वन मृगया हित कीन्ह तयारी॥

दो॰ विविध भाँति भूषण वसन अँग अँग सजे बनाय।
बरणिसकै नहिं सहसमुख सो सुखमा समुदाय॥

कवित्त॥ सोहै शीश चौतनी सुभग घुँघुवारी लटै कुण्डल अनूप गोल गालनपै झलकै। पङ्कज वदन चारु सुखमा सदन देखि लाजत मदनमाल मुक्तकंठ हलकै॥ जरीजरवफ्त ऊन रेशमी पोशाक साजि छोरन दुशाल गुच्छ मोतिभा सुछलकै। पानि चाप बानधारि खैंचिकै निषंग लंक रूपता विलोकि सो अपल होत पलकै॥ साहनी बोलाय दीन शासनै तेजाय बेगि जाति जाति अश्वनै लयायकै तयारहै। ताजी तूरकानी मूलतानी फीरगानी देश अरब इरानी रूम काबुली खँधारहै॥ काशमीरि गूजराति काठियाहुवार कच्छि मागधी दरयाई मरहट्ट माड़वारहै। औरहू अनेक देश देशके तुरंग साजि आनि जो बखानि जात नाहिं बेशुमारहै॥ संदली कपूरि जर्द तेलिया बलख चीनि नोकरा कुमैत सब्ज धानिया सुरंगमें। कुल्लाकार सूरखा सोनाहुला समुद श्याम करन बदामि जाल सोहै हर्द रंगमें॥ किस्मिसी अँगूरि लाखि दूधिया सु ईलमासि फूलवारि गर्रासेत गूलदार अंगमें। तामड़ा मुसुकि नूरि सीरगा सँजाफि और भाग्यवन्त बाजिहैं अनन्त रङ्ग रङ्गमें॥ सुंदर अनूप नव्य जातरूप हीर आदि रचित सुजीन चारु पूजी जेरबन्दनै। भाग्यवन्त गूंधि आल चोटिनै लगाय पांन कञ्चन रकाब मञ्जु खींचि पुष्ट तंगनै॥ दूमची लगाम हेम बागे दिव्य रेशमं कि हैकल हमेलहै अमोल पेशबन्दनै। कामदार ज्योतिवान डारिकै सुजीनपोश कायजासमेत लाय बाजि शोभकन्दनै॥ सवैया॥ सानँदराम सबंधु सखा सब कूदि सवार भये वरबाजी। औरहु राजकुमार अनेक विभूषण चीर सुअंगन साजी॥ शीश

धरे कइ कीट मनोहर काहुकि टोपिनकी छबि छाजी। बांधि कई पगरी अगरी छबिजात कही नहिं सोति विराजी॥ कइ पट्टन झारि दुपट्टन बांधि सुछोरहि पृष्ठि उलट्टतहै। उरमाल अनूप लिये करमें कइ लंकजरी सु लपट्टत है॥ अनमोल बढ़े सुदुशालकई लखिभास्कर भा ज्यहि हट्टतहै। वरनौ किमि रंगदुशालन के यक एकनते वर ठट्टतहै॥ कवित्त॥ कासनी सुरंगसेत काहिली बदामि नील संदली गुलाबि जर्द बैंजनी अँगूरिया। नारँगी सहाबि ऊदि जौजई गुलालि सब्ज धानिया बिलाखिलाल किस्मिसी अबीरिया॥ कोचकी सजाफरानि मूंगियाहु आसमानि शर्बती चुनौटियारु पिस्तई कपूरिया। सुर्मई जँगालि मंजु कंजई सुभाग्यवन्त कोकई स्वनाहुला सिंगर्फि औ मँजीठिया॥ अङ्गन अनूप दिव्य भूषण विराजमान हेमहीर माणिक सुजाल ज्योति जागती। कुंडल सकान शुभ्र नासिका बुलाक सोह मंजुल सुमाल मुक्त कम्बु कण्ठ हालती॥ रूपके अगार बै किशोर भेसवार बाजि भाग्यवंत तासमै कि गाउमें सु क्यागती। साधि बाग आसनै लगाय ढंग बाजिनै सुचालनै चलाव जो बखानि मोन आवती॥ सवैया॥ राजकुमार नचावत बाजि चलावत हैं बहु सुंदरचाली। पर्रन बांधि सुदर्रन धावत कोइ चलावत पोइरुहाली॥ कोइ कुदावत भूमिखड़े सुजमावत कोइ फँदावत नाली। कौनप्रकार कहै भगवन्त सुएकन सो गति एक निराली॥ देवन व्योम अनन्दभरे लखि फूलन की झरि भूपरलाई। पावन कीरति राघवकी भगवन्त रहे सब सादर गाई॥ जातचले मृगयार्थ वनै प्रभु भाषत सो न बनै प्रभुताई। नांघत शैलनदी नदनार अटे सु अरण्य गँभीरन जाई॥ देखिपरे मृगया उतरे सुतरे निज बाजिनते मुदभोरे। जानि पुनीत कुरंग

कृपाकर लै धनुबाण तिन्हैं तकिमारे ॥ रामवधे निजबाण जिते मृग ते तुरतै हरिधाम सिधारे। पेखि प्रभाव कहैं सुरजै प्रभु जैप्रभु जैप्रभु औधदुलारे॥ कवित्त ॥ खेलिकै शिकार भानु अस्तकाल जानि फांदि वाजि ह्वै सवार बेगि भौनही सिधाये हैं । वेगता विलोकि तौन हारती है मन गति पावही न पार पौन गौनहू लजाये हैं ॥ हंस वंश भूषण कृपाल रामचन्द कन्द आनँद स्वछन्द मध्य औध सद्य आये हैं । भाग्यवंत पावन सुयश शोक दावन सुताप त्रै न-शावन कलाप बंदि गाये हैं ॥ शुभगीत छंद॥ जै राम पूषण वंश भूषण अमल पंकज लोचनं । सुखसिन्धु पूरणकाम शोभाधाम भौभय मोचनं ॥ कृत चरित संसृत तरण कलिमल हरण सुर मुनि रंजनं । आनन्द कन्द स्वछन्द व्यापक विश्व खल दल गंजनं ॥ इमि सुयश गावत बंदि पावन राम घर आवत भये। शिरनाय भू-पति पांय आशिष पाय पुनि भीतर गये ॥ लखि मातु सानँद धाय लीन्ह्यो लायउर चारौ तनै। कहि सकन शारद शेष मुख सोजौनभा जननी मनै ॥ पोशाक सकल उतारि पुनि मुख धोइ मन आनँद लह्यो। चलि तात भोजन करहु सुन्दर जाय बलि जननी कह्यो ॥ सुनि मातुके वरबैन करुणा ऐन सानुज आयकै। भगवन्त कीन्ह्यो अशन सादर मातु परस्यो चायकै ॥

दो० जूठनिको गरजी करै अरजी जन भगवन्त।
दीजे करि मरजी सपदि हरजीवन निजतन्त ॥

सुभग सेज पुनि चारो भाई। कीन शयन सुखमा अधिकाई॥
प्रात जागि सानुज रघुराई। गुरु पितु मातु चरण शिरनाई॥
शासन लहि कारज पुर करहीं। लखिलखि भूप मोद मनभरहीं॥
पुरजन देखि चरित सुखपावहिं। जहँतहँ विमल रामगुण गावहिं॥

कथा अनेक कहहिं मुनि ज्ञानी। सादर सुनहिं सकलसुखमानी॥
कबहुं आपु प्रभु कहहिं बुझाई। सुनहिं सप्रेम मुदित सब भाई॥
नारदादि मुनिवर नित आवैं। सादर प्रभुपावन यश गावैं॥
यहि विधि अवधपुरी रघुबीरा। करहिं चरित भंजन भव भीरा॥

छप्पै॥ जो प्रभु अगम लखात शेष शारद शिव वेदै। नारद शुक सनकादि लहत ब्रह्महु नहिं भेदै॥ जासुनाम बल सृजत लोक विधि नाशत ईशा। पालत विष्णु प्रभाव जासु आज्ञा सब शीशा॥ स्वइनाथ सकल साकेतपति करुणाकर जन दुखहरण। धरि मनुज देह अवधेश गृह करत चरित संसृत तरण॥ स्वइ सुकृती शुचि साधु स्वई पंडित स्वइ ज्ञानी। स्वइ दाता धनवान चतुर सोई गुणखानी॥ स्वइ पावन मन वचन कर्म सोई नयनागर। जप तप तीरथ सफल तासु सोई सुख सागर॥ तजि कपट सकल ध्रुव प्रीति करि रामदास जो ह्वैरहै। भगवंत प्रशंसत संत त्यहि जीवन फल जग स्वै लहै॥

इतिश्रीरामचन्द्रकैशोरलीलावर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो॰ रघुपति जन्म चरित्र शुचि मैं कछु कह्यों बखानि।
सीय जन्मकर चरित अब कहौं सकल सुखदानि॥
सीतासम पावन करण सीतायश सुख कन्द।
सीता जन मन दुख हरण गावत सीता वृन्द॥
विप्र चन्द्रशर्मा रह्यो एक परम हरिभक्त।
नारि चंद्रभागा सु त्यहि दोऊ विषय विरक्त॥
हरिसनेह सम्भारि हिय नैमिष वन चलिजाय।
युगलमंत्र जपि तपअमित कीन्हे दोउ सतिभाय॥

सवैया॥ साधन सिद्ध भयो दिन पूर्ण सशक्ति प्रभू तव दर्श

दिखायो। ह्वै सुप्रसन्न कह्यो वर माँगहु जो मनमें अभिलाष रहा-
यो॥ कै पुटपानि प्रणाम कियो अति प्रेमभरे द्विजबैन सुनायो।
शक्ति सुता करि नाथ लहौं सुजमात्र चहौं तुम सो मनभायो॥
सिद्ध मनोरथ भे तुम्हरे सब यों कहि फेरि कह्यो प्रभु बैना। ह्वै जन-
कापु जबै मिथिलापति होव तहां यह रानि सुनैना॥ अंशन संयुत
ह्वै तनया मम शक्ति तबै प्रकटी तव ऐना। हौं मिलिहौं जिमि आनि
तुम्हैं तहँ सो सु प्रसंग सुनौ सुखदैना॥

मनु शतरूपा तप बहु कीन्हा। तिन्ह कहँ मैं प्रथमैं वर दीन्हा॥
अवध नृपति ते ह्वैहहिं जाई। तिनके तनय होब हम आई॥
तहँ जामात्र होब अस भाषा। करिहैं तव पूरण अभिलाषा॥
भये बहुरि प्रभु अंतरधाना। द्विजमनमाहिं परमसुखमाना॥
कछु दिन गये त्यागि तनु दयऊ। मिथिलापुर प्रकटतदोउभयऊ॥
भूप जनक अरु रानि सुनैना। सब गुणखानि सुकृतसुखऐना॥
राज करत बीते बहुकाला। एक समय तहँ परेउ दुकाला॥
भूप बुधन तब कह्यो हँकारी। करिय युक्ति वरषै ज्यहि वारी॥

दो० तब तिन कह नृप इन्द्रमख जो कीजे यहि काल।
तौ पुनि वरषै वारि बहु जग सब होइ सुकाल॥

कीन्ह तुरत स्वइ भूप उपाई। चामीकर कर हल बनवाई॥
शतानंद अरु भूपति रानी। जोतन लगे परम सुखमानी॥
जब षटवार भूमि हल आयो। सप्तमभू यक विवर लखायो॥
तहँ पुनि प्रकट्यो एक विमाना। अति सुन्दर नहिं जाय बखाना॥
अमित प्रकाश अमित छबि छाजै। आदिशक्ति त्यहिमाहिं विराजै॥
मध्य भूमिजा बैस किशोरी। राजत सकल सखी चहुँ ओरी॥
रूपराशि वरणौं किमि शोभा। लखि रतिकाम कोटिमनलोभा॥

वरषि सुमन सुर नृपसन कहेऊ। पूरण शक्ति सुता तव भयऊ॥

दो० याते यश पैहौ अमित ह्वैहै सब मनकाम।

परब्रह्म यहि हेतु नृप आवहिंगे तव धाम॥

मोदकछंद॥ मानि सुताकर भाव महीपति। सेवहुलै घरजाइन्हें अति॥ भूप बिनै बहुभाँति किये जब। तौ सिय पूर्व चरित्र कहे सब॥ फेरि बिदेह बिनै करि योंकह। ह्वै शिशु देहु सु आनँद मो कहँ॥ लीन तबै शिशुरूप सियाधरि। अन्तरधान बिमान दियाकरि॥ सानँद आनि सुता तब घर्महिं। श्राद्धकिये अरु जात सुकर्महिं॥ माधव नौमि सुमंगल दिन्महिं। शुक्र सु पुष्य लिये सिय जन्महिं॥ विप्रन दान दिये बहुराजन। बाजहिं भाँति अनेकन बाजन॥ आनँद मंगल छाय रह्योपुर। भूपति मोद अपार लह्यो उर॥

लावनीछन्द॥ आजु मिथिलेश घरमाई। सुतागुणरूपमें जाई॥ सुमनबभदेव भरिलाये। नगर्नरनारि सुनिधाये॥ लिये कर हेमकी थारी। चलीं सब आरती वारी॥ दो०॥ भूप सदनभे भीर अति परमानँद रह्यो छाय। बंदी मागध सूतगण गावत गुण समुदाय॥ शब्द तिहुँलोक में छाई १ सखी सब मंगलै गाई। जनकपुरधूम है छाई॥ लिये नृप बोलि याचकहें। किये तिनको अयाचकहें॥ दो०॥ दान पाथ नृप हाथ सरि आनँद वरषापाय। उमँगिचल्यो है जनकपुर याचक सिंधु अघाय॥ फेरि पर द्वार ना जाई २ हरष नरनाग सुरलोकै। दुवन दुखरैनि जिमि कोकै॥ बधाई द्वार पै बाजै। मनो घन व्योम में गाजै॥ दो०॥ कउ नाचत गावत कऊ सस्वर दै दै ताल। मची कीच मगबीच रँग परमानँद पुरबाल॥ रङ्क पारस जनुपाई ३ जनक सम पुरय कांकी है। सुता शक्त्यादि